Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सव्वे अकंतदुक्खा य,
अओ सव्वे अहिंसगा।

कोई भी जीव दुःख नहीं चाहता, इसलिए सभी जीव अहिंस्य हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 32 • 16 - 22 मई, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 14-05-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के 49वें दीक्षा दिवस 'युवा दिवस' पर शत-शत वंदन-अभिनंदन

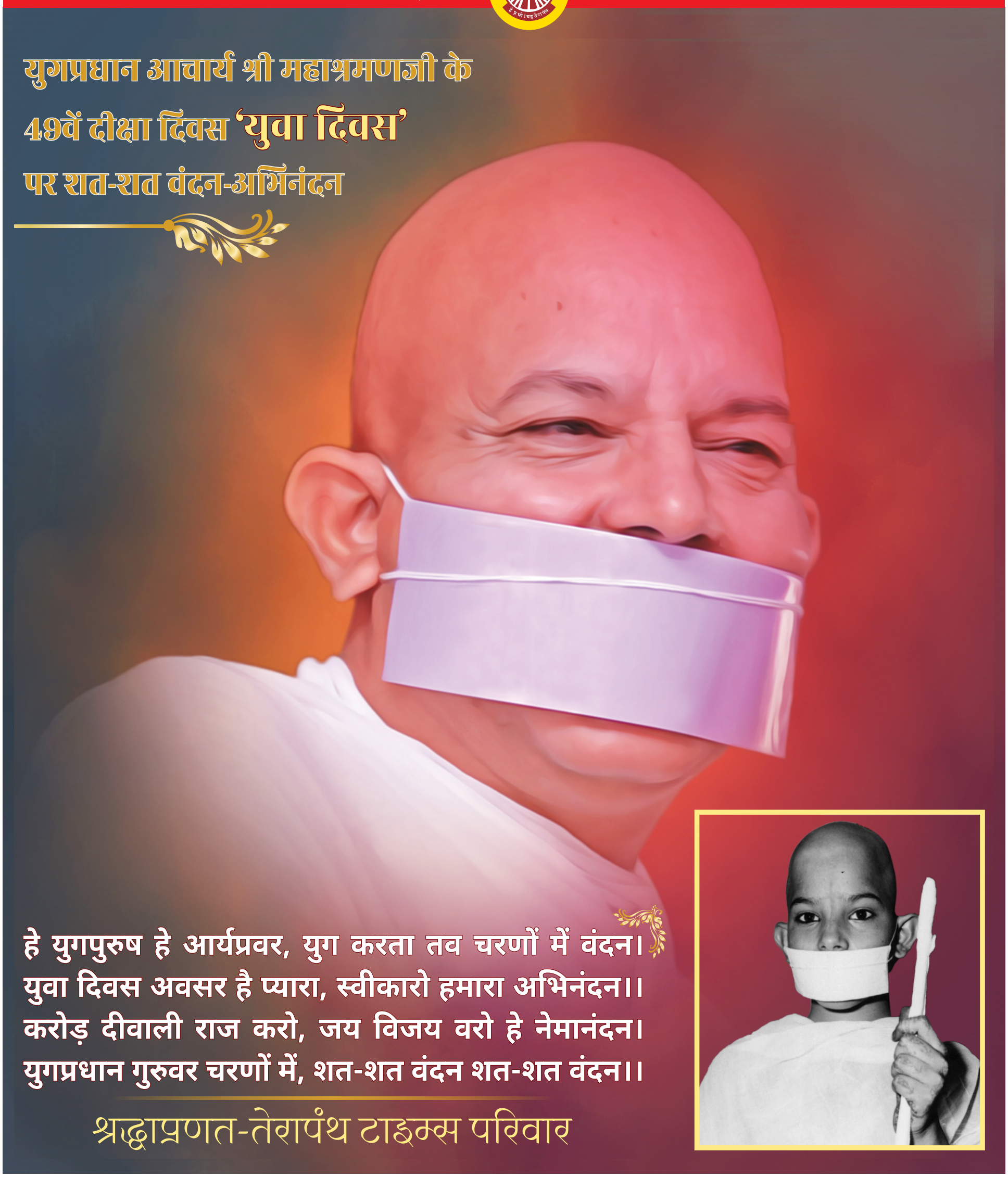

हे युगपुरुष हे आर्यप्रवर, युग करता तव चरणों में वंदन।
युवा दिवस अवसर है प्यारा, स्वीकारो हमारा अभिनंदन।।
करोड़ दीवाली राज करो, जय विजय वरो हे नेमानंदन।
युगप्रधान गुरुवर चरणों में, शत-शत वंदन शत-शत वंदन।।

श्रद्धाप्रणत-तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 - 22 मई, 2022

✦ *रोज सोने से पूर्व सोचो, आज के दिन तुमने सुकृत क्या किया, भला काम क्या किया? यह सोचना भी तुम्हारे लिए शुभ होगा।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

दीक्षा महोत्सव का हुआ भव्य आयोजन

दु:ख मुक्ति का रास्ता है - संन्यास लेना : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, ६ मई, २०२२

वीतराग के साधना शिखर, संयम प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में आज दीक्षा महोत्सव का आयोजन हुआ। मुमुक्षु निशा डागा को परम पावन ने साध्वी दीक्षा प्रदान करवाई।

महामनीषी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी आत्मा अनादिकाल से और अनंत काल से जन्म-मरण की परंपरा में भ्रमण कर रही है। जन्म-मरण होना कब शुरू हुआ उसका कोई समय नहीं है। यह परंपरा निरंतर चल रही है। बार-बार जन्म-मरण चलता रहता है।

इस संसार में दु:ख है। हालाँकि सुख भी है, पर जन्म, बुढ़ापा, रोग और मृत्यु दु:ख है। इसलिए यहाँ प्राणी संकलिष्ट हो जाते हैं। आदमी के मन में ये बात आ सकती है कि मैं इस दु:खमय संसार में ही रहूँगा या इससे मुक्ति भी पा सकता हूँ? दु:ख मुक्ति मिल तो सकती है। उसका उपाय क्या है?

दु:ख मुक्ति का रास्ता है, संन्यास लेना, जिस श्रद्धा के साथ निष्क्रांत हुए हो, घर छोड़ संन्यास ग्रहण किया है, संयम पर्याय उत्तम स्थान को लिया है, उसका पालन भी करें। गुरु आज्ञा का सम्यक् पालन करते हुए संयम का पालन करें।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

सरदारशहर की पावन धरा पर हुआ अक्षय तृतीया का सफल कार्यक्रम

हमें अक्षय सम्यक्त्व मिले, जो कभी क्षीण न हो : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, ३ मई, २०२२

अक्षय तृतीया का पावन दिन जो जैन धर्म व अन्य धर्मों से जुड़ा दिन है। भगवान ऋषभ के लगभग १३ माह, १० दिन की चौविहार तपस्या आज के दिन उनके प्रपौत्र श्रेयांस कुमार द्वारा ईक्षु रस से पारणा हुआ था। इसी परंपरा के अनुसार वर्षीतप के पारणे होते हैं।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इस पावन दिन मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिक जगत में धर्म के तीन प्रकार बताए गए हैं। आध्यात्मिक साधना के तीन प्रकार हैं—अहिंसा, संयम और तप। आज अक्षय तृतीया का कार्यक्रम हो रहा है।

वर्तमान का वर्षीतप भगवान ऋषभ के तप का आंशिक रूप है। उसका अनुकरण किया जा रहा है। भगवान ऋषभ ने तो संकल्प सहित वर्षीतप नहीं किया था, हो गया था। दान उनको मिला नहीं। उन्होंने बहुत बड़ी तपस्या की थी। वर्तमान में इतनी बड़ी तपस्या संभव नहीं है।

उपवास करना भी अच्छा तप है। उपवास करने से और साधना करने के लिए समय मिल जाता है। भगवान ऋषभ

गृहस्थ अवस्था में पहले रहे थे। बाद मे साधु बने थे। गृहस्थ अवस्था में उन्होंने समाज की सेवा की थी। मैं उनको एक राजनीति का मानता हूँ। राजनीति करना भी एक सेवा है। उन्होंने जनता को प्रशिक्षण दिया था। बाद में वे अध्यात्म नीति में आए। वे धर्मनेता बन गए थे।

वर्तमान अवषर्पिणी के वे प्रथम तीर्थंकर, अध्यात्म के प्रवक्ता बन गए थे। उनसे बड़ा और कोई नहीं था। वे धर्म के प्रवक्ता बन गए थे। वे साधु बन गए थे। प्रवक्ता बनने के साथ साधना भी हो। साधना और धर्म की बात करने वाला प्रवक्ता व्यक्ति साधना खुद भी करे तो उसकी बात का ज्यादा महत्त्व हो सकता है।

यह वर्षीतप एक बहुत अच्छी साधना है। चैत्र कृष्णा अष्टमी से नए सिरे से वर्षी तप शुरू होता है। उपवास के साथ जप, कषायमंदता की साधना चले। चारित्रात्माओं ने, समणियों ने, श्रावक-श्राविकाओं ने कितने-कितने वर्षी तप कर लिए हैं। मैं तो साधुवाद दूँगा वर्षीतप करने वालों को कि उन्होंने अच्छा कार्य किया है। आत्मशुद्धि का अच्छा उपक्रम वर्षीतप है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सत्ता का घमंड नहीं, उससे सेवा करें : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, ५ मई, २०२२

ज्ञानदीप आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना देते हुए फरमाया कि हमारे भीतर अनेक वृत्तियाँ हैं। चार कषाय की वृत्तियाँ गुस्सा, अहंकार, माया, लोभ भी है। चार संज्ञाएँ भी आगम वाङ्मय में बताई गई हैं। आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा और परिग्रह संज्ञा।

वृत्तियाँ कई अच्छी हैं, तो कई बुरी भी हैं। अच्छी वृत्तियाँ हमारे गुण हैं, जैसे क्षमा, ऋजुता, मृदुता, संतोष। एक वृत्ति जिसे दुर्वृति कहा जाता है, वह अहंकार-घमंड। आदमी में बड़प्पन की भावना, दूसरों को अपने अधीन रखने की भावना, दूसरों का दिल दुखाना दुर्भावना हो सकती है। आदमी के ज्ञान का भी घमंड हो जाता है।

ज्ञान है, तो प्रदर्शन करने का भाव है। ज्ञान होने पर भी मौन रखना। शक्ति होने पर भी क्षमा रखना। गृहस्थों को धन का घमंड नहीं करना चाहिए। पैसे के प्रति आसक्ति न हो। मोह का भाव नहीं होना चाहिए। पैसे का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। रूप का भी घमंड न हो। ये सब पुण्य के योग से मिलते हैं। ताकत, सत्ता, अधिकार का घमंड नहीं, उससे सेवा करें।

किसी के साथ शत्रुता का भाव न हो। शत्रु को भी मित्र बनाने का प्रयास हो। मेरा कोई शत्रु न रहे। शत्रु के प्रति भी दुर्भावना न हो। शत्रुता का जवाब विनय भाव से दें। किसी प्रकार का घमंड न हो। साधु और गृहस्थ को भी घमंड से बचना चाहिए। अहंकार कर्म बंधन का कारण है।

ज्ञानदाता गुरु का नाम बताने में भी संकोच, अहंकार न हो। गुरु के प्रति सम्मान का भाव हो। हमारे में विनय धैर्य का भाव हो। उतावलापन ज्ञान का घमंड से गलती हो सकती है। विनय से संपत्ति मिलती है, उद्दंडता से आदमी को विपत्ति मिल सकती है। हमें अहंकार नहीं करना चाहिए। हमें जीवन में घमंड से बचने का प्रयास रखना चाहिए। यह हमारे लिए अच्छा हो सकता है।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि अमृत पान देवता से अच्छा मनुष्य कर सकता है। वर्तमान में जीने का प्रयास करता है, आत्मा के आसपास रहता है, वह व्यक्ति अमृतपान कर सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी मीमांसाप्रभाजी, छत्र बुच्चा, सुमन पींचा, विमल सामसुखा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जिसका मन धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, ७ मई, २०२२

जन कल्याण के लिए सतत गतिमान आचार्यश्री महाश्रमण जी सरदारशहर के वृद्ध-असक्त श्रावक-श्राविकाओं को प्रातः घर-घर जाकर सार-संभाल कर रहे हैं। आज लगभग १०:३० बजे तक पूज्यप्रवर श्रम करवाते रहे। जन-जन के मुख पर एक ही बात थी—आध्यात्मिक गुरु कैसा हो, आचार्यश्री महाश्रमण जी जैसा हो।

लगभग १०:३० बजे पूज्यप्रवर युगप्रधान समवसरण में पधारे। मंगलमय अमृतवाणी से पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जैन शासन में धर्म को उत्कृष्ट मंगल बताया गया है। अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है, तप धर्म है। इस धर्म की जो आराधना करता है, वह देवों के लिए भी नमस्करणीय हो जाता है। देवता भी उसको नमस्कार करते हैं, ऐसा शास्त्र में कहा गया है। जिसका मन धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

देवता नमस्कार करें, न करें एक अलग विषय है, मूल आत्मा का कल्याण धर्म से होता है। इसलिए आदमी को धर्म की साधना जितनी जिंदगी में कर सके, वो करने का प्रयास करना चाहिए। धर्म ही एक ऐसा तत्त्व है, जिससे शांति भी मिलती है, शक्ति भी मिलती है और आगे का कल्याण का भी सुनिश्चय हो जाता है। आगे की स्थितियाँ भी अच्छी रह सकती है, इसलिए हमें जिंदगी में जितना संभव हो सके, धर्म के पथ पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यप्रवर के संसारपक्षीय पारिवारिकजन की ओर से प्रियंका दुगड़, प्रतिभा दुगड़, निधि दुगड़, मास्टर चिन्मय दुगड़, संगायक कमल सेठिया, सुनीता बांठिया, राज सेठिया, सौम्या नाहटा, कोकिला कुंडलिया, राजू दफ्तरी, डॉ० कुसुम लुणिया ने अपनी भावना गीत, कविता व वक्तव्य से पूज्यप्रवर के चरणों में अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हम कभी दूसरों का अहित न करें, न वाणी के द्वारा, न शरीर के द्वारा, न मन के द्वारा। जब चेतना जग जाती है, तो आदमी पाप कर्म से बच सकता है।

मंगलभावना कार्यक्रम का आयोजन

नोएडा।

साध्वी शुभप्रभाजी के सान्निध्य में मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी शुभप्रभाजी ने कहा कि दुनिया में चार चीजें वापस नहीं मिलती—धनुष से निकला बाण, खोया हुआ समय, मुँह से निकली बात, जीया हुआ जीवन।

भगवान महावीर ने कहा कि क्षण भर भी प्रमाद न करें। अतीत एवं भविष्य की कल्पना को छोड़ वर्तमान समय का सदुपयोग करें। जो धर्ममय जीवन यापन करता है वही समय का मूल्यांकन कर सकता है। साध्वीश्री जी ने धर्म क्यों, कब, कैसे करना के कुछ टिप्स बताए।

दृष्टि, दया के गीत की ध्वनि से कार्यक्रम का मंगलाचरण हुआ। सभाध्यक्ष रणधीर बेद, महिला मंडल अध्यक्षा कविता लोढ़ा, मंत्री दीपिका चोरड़िया, सुरेंद्र नाहटा, मोतीलाल नाहटा ने सुंदर भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के बच्चों, शौर्य दुधोड़िया, गुण बोथरा, वारिधि बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुकेश दुधोड़िया ने किया।

लगभग १५ दिवसीय प्रवास में साध्वी मंदारयशा जी का उपदेश का क्रम बना। साध्वी कांतयशाजी, साध्वी अनन्यप्रभा जी ने क्रमशः गीत की प्रस्तुति दी।

दुःख मुक्ति का रास्ता है - संन्यास...

(पृष्ठ २ का शेष)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ में अतीत में दस आचार्य हुए हैं। वर्तमान आचार्य ही प्रायः दीक्षा प्रदान कराते हैं। कभी-कभी आचार्य की आज्ञा से अन्य साधु-साध्वी भी दीक्षा प्रदान कर सकते हैं।

दीक्षा एक नया अभिनिष्क्रमण-प्रस्थान है। संयम का स्वीकरण होता है। आज एक बहन की दीक्षा होने जा रही है, जो सरदारशहर से ही हैं। हमारे पास लिखित आज्ञा पत्र आ गया है। तत्पश्चात पूज्यप्रवर ने पारिवारिक जनों से मौखिक आज्ञा व दीक्षार्थिनी बहन की भी मौखिक आज्ञा ली।

दीक्षा संस्कार का कार्यक्रम पूज्यप्रवर ने आर्षवाणी से शुरू किया। भगवान महावीर एवं पूर्वाचार्यों का स्मरण करते हुए नमस्कार महामंत्र से मुमुक्षु निशा डागा को सर्वसावद्य योग तीन करण तीन योग से यावज्जीवन का त्याग सामायिक पाठ के उच्चारण से करवाया।

पूज्यप्रवर ने अतीत की आलोचना करवाई। केश लुंचन संस्कार मुख्य नियोजिका विश्रुतविभाजी ने किया। रजोहरण प्रदान मुख्य नियोजिका जी से करवाया। दीक्षा के साथ ही नया जन्म हो जाता है। पूज्यप्रवर नया नाम संस्कार करते हुए मुमुक्षु निशा का नया नाम साध्वी नमनप्रभा किया।

पूज्यप्रवर ने साधुचर्या की शिक्षा प्रदान करवाई। श्रावक-श्राविका समाज ने नवदीक्षित साध्वी को वंदना की। अनुशासन का ओज आहार पूज्यप्रवर के द्वारा बाद में अंदर प्रदान करवाया जाएगा। पूज्यप्रवर ने सुमंगल साधना के विषय में भी विस्तार से समझाया।

मुख्य नियोजिका जी ने दीक्षा के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि दीक्षा तन की औषधी है। जो व्यक्ति अध्यात्म के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता है, उसे दीक्षा स्वीकार करनी होती है। समर्थ और शक्ति संपन्न गुरु ही दीक्षा प्रदान करा सकते हैं। दीक्षा का मतलब है—व्रतों को ग्रहण करना। दीक्षा-वैराग्य के भाव निमित्तों से आ सकती है। इन निमित्तों के कारण व्यक्ति राग से विराग की ओर जाता है। दीक्षा का मार्ग फूलों का मार्ग है, तो शूलों का मार्ग भी है। फिर भी व्यक्ति दीक्षा ग्रहण करना चाहता है।

दीक्षा से पूर्व मुमुक्षु निशा का परिचय मुमुक्षु मीनाक्षी आंचलिया ने दिया। आज्ञा पत्र का वाचन पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संयोजक मोतीलाल जीरावला ने किया। लिखित आज्ञा पत्र को मुमुक्षु निशा के पिता किशनलाल व माँ कांतादेवी ने श्रीचरणों में अर्पित किया। मुमुक्षु निशा ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा समूह गीत की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि मोक्ष का मूल गुरु कृपा हो सकती है। हमारे जीवन में सम्यक्त्व का महत्त्व है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 - 22 मई, 2022

✦ *जीवन का सार है सच्चाई। दुनिया में यथार्थ भाव आज भी जीवित है। कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो यथार्थ की आराधना करने का प्रयास करते हैं।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

श्रीउत्सव का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में श्रीउत्सव का आयोजन किया गया।

महिला मंडल अध्यक्षा सोहनी देवी सालेचा ने सभी का स्वागत किया। साथ ही मंत्री ममता मेहता ने श्रीउत्सव की जानकारी के साथ नियम बताए। श्रीउत्सव कार्यक्रम के अतिथि के तौर पर अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य एवं मंडल प्रभारी सारिका बागरेचा का स्वागत सम्मान किया गया। उनकी इस उपस्थिति के लिए मंत्री ममता मेहता ने आभार ज्ञापन किया। सारिका बागरेचा ने सभी बहनों का कैसे इस कार्यक्रम को बेहतर बना सकते हैं, इसकी जानकारी दी।

इस श्रीउत्सव में किताबें, गेम्स, साड़ी, बैग्स आदि स्टॉल व खाने की स्टॉल भी लगाए गए। सभी बहनों की उपस्थिति रही।

पुरानी ढालों का पुनरावर्तन कार्यशाला

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं की अध्यक्षता में निर्मला देवी संकलेचा की अध्यक्षता में पुरानी ढालों का पुनरावर्तन कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत का संगान किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने कार्यक्रम की जानकारी दी। महाश्रमण तत्त्वज्ञान सेंटर के अध्यक्ष कविता सालेचा ने दस दान के बारे में जानकारी दी।

कार्यशाला में गीतिका का संगान किया गया। सभी बहनों ने दस दान की गीतिका कंठस्थ करने की प्रेरणा दी। इस कार्यशाला में अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, परामर्शक पीपी देवी ओस्तवाल, उपाध्यक्ष रानी बाफना, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा, पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल तथा पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग ७० बहनें उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म कार्यशाला

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में साध्वी उर्मिलाश्री जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में रूपांतरण थ्रू जैनिज्म कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था—ध्यान। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत की गई। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि साध्वी रितुयशा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी ज्ञानयशा जी ने चारों ही ध्यान की चर्चा की। साध्वी उर्मिला कुमारी जी ने कहा कि ध्यान के बिना धर्म सिर रहित धड़ के समान है, जैसे शरीर में मस्तिष्क मूल है वृक्ष में जड़ मूल है, उसी प्रकार श्रमणधर्म में ध्यान मूल है।

इस कार्यशाला में अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका वागरेचा, परामर्शक पीपी देवी ओस्तवाल, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल, देवी बाई छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग १७५ भाई-बहन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

रूपांतरण शिल्पशाला

अहमदाबाद।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष चांद छाजेड़ द्वारा सभी का स्वागत किया गया तथा ध्यान के द्वारा निर्मलता व शुद्धता की ओर बढ़ने का आह्वान किया। साध्वी परमार्थप्रभाजी ने नियमित कायोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की।

साध्वी नंदिताश्री जी ने कहा कि अगर व्यक्ति की दृष्टि सम्यक् हो तो वह दुख में से सुख खोज सकता है। साध्वी संवेगप्रभाजी ने हमें नियमित रूप से ध्यान करने की प्रेरणा दी। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि न तेरा है ना मेरा हमें आत्मलीन होकर ध्यान करना चाहिए। उपासक विजयराज संकलेचा ने ध्यान करवाया। आभार ज्ञापन मंत्री अनिता कोठारी ने किया। कार्यक्रम का संचालन चेतना कोठारी ने किया।

जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योगाभ्यास का कार्यक्रम

आवडी, चेन्नई।

अणुविभा के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति द्वारा उपनगर में स्थित तमिलनाडु स्पेशल पुलिस ट्रेनिंग रेजिमेंटल सेंटर आवडी क्षेत्र में जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संचालन अणुव्रत समिति सदस्य एवं योग प्रशिक्षक हरीश भंडारी एवं विनोद हिरण ने किया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में विनोद हिरण ने महाप्रयाण ध्वनि का प्रयोग करवाया। योग प्रशिक्षक हरीशभंडारी ने इसी क्रम को गति देते हुए विधिपूर्वक प्रेक्षाध्यान, यौगिक क्रियाओं एवं सूर्य नमस्कार सहित अनेक योगासनों के प्रयोग करवाए।

अणुव्रत समिति, चेन्नई के अध्यक्ष ललित आंचलिया के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति के निवेदन पर आईपीएस ऑफिसर वेनमदी ने इस कार्यक्रम की रूपरेखा रची। इस कार्यक्रम में डेप्यूटी कमांडेंट चंद्रमोहन, चीफ ड्रिल इंस्ट्रक्टर शक्तिवेल मुरुगन एवं ड्रिल इंस्ट्रक्टर मुरुगन की गणमान्य उपस्थिति रही। २०३ कैडेट्स और ६ ऑफिसर की उपस्थिति में आयोजित यह कार्यक्रम सफल रहा।

डेप्यूटी कमांडेंट चंद्रमोहन ने अणुव्रत समिति, चेन्नई के अध्यक्ष ललित आंचलिया का स्वागत किया और कार्यक्रम की समाप्ति पर सब-इंस्पेक्टर मुरुगन ने अणुव्रत समिति की इस पहल पर धन्यवाद ज्ञापित किया।

हमें अक्षय सम्यक्त्व मिले, जो कभी...

(पृष्ठ २ का शेष)

पूज्यप्रवर ने वर्षीतप के नियम समझाए। ये नियम वर्षीतप को आभूषित करने वाले बन जाते हैं। वर्षीतप में लगे दोषों की शुद्धि के लिए पूज्यप्रवर ने ५१ सामायिक की आलोयणा दिलवाई। हमें अक्षय सम्यक्त्व मिले, क्षायिक चारित्र भी प्राप्त हो, ऐसी अक्षय शक्ति मिले जो वापस क्षीण न हो जाए।

अक्षय तृतीया की तिथि बड़ी शुभ मानी जाती है। आज के दिन अच्छा काम किया जा सकता है। पुनः वर्षीतप शुरू करने वालों को पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान करवाए।

पूज्यप्रवर ने आगे फरमाया कि आज ही के दिन मंत्री मुनिश्री सुमेरमल जी 'लाडनूं' का तीन वर्ष पूर्व महाप्रयाण हो गया था। मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। वे मेरे परम उपकारी रहे हैं। साध्वीप्रमुखाश्री जी भी नहीं रहे हैं, उनको भी सादर भावांजलि अर्पित करता हूँ। उनकी अनुपस्थिति में हमारा ये कार्यक्रम हो रहा है। आगे वर्षीतप करने वालों के प्रति भी मंगलकामना।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि तीर्थंकर जन्म के साथ ही तीन ज्ञान के धनी होते हैं। भगवान ऋषभ ने सत्य को साक्षात किया था। वे अतिन्द्रिय ज्ञान से संपन्न थे। लोगों की समस्या का समाधान किया। उन्होंने सामाजिक व्यवस्था के साथ आध्यात्मिक व्यवस्था भी स्थापित की।

मुख्य नियोजिका जी ने अक्षय तृतीया के दिन के इतिहास को समझाते हुए इसके महत्त्व को समझाया। तपस्या को सभी धर्मों ने स्वीकार किया है, इससे कर्म निर्जरा होती है। आठ प्रकार की कई ग्रंथियाँ तप से शांत होती है। मनोबल से तपस्या हो सकती है। तपस्या से आत्मतोष मिलता है।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि यह संसार अध्रुव, अशाश्वत है। परिवर्तन का कालचक्र चलता रहता है। वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे आरे में भगवान ऋषभ का जन्म हुआ था। उन्होंने विश्व व्यवस्था को सुदृढ़ किया। गीत का सुमधुर संगान किया। हमारी समता अक्षय बने।

सरदारशहर में लगभग १७० तपस्वियों ने पूज्यप्रवर की सन्निधि में पारणे किए। ३ साधु व ५ साध्वियों ने पूज्यप्रवर से ईक्षु रस ग्रहण किया। ४ समणियों ने भी वर्षीतप का पारणा किया। मुमुक्षु सलौनी ने भी वर्षीतप का पारणा किया। इस बार के पारणे की यह विशेषता थी कि १३ वर्ष के दक्ष नखत ने भी वर्षीतप का पारणा किया। महिला मंडल, कन्या मंडल व ज्ञानशाला ने समुह गीत की प्रस्तुति दी। व्यवस्था समिति की महामंत्री सूरज बरड़िया ने सभी का स्वागत व आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

स्मृति शेष

शासनश्री साध्वी गुणमाला जी के प्रति

● **शासनश्री साध्वी सोमलता** ●

संघर्षों की घाटियाँ, करके सारी पार।
भिक्षु शासन में किया, संयम पथ स्वीकार।
संयम पथ स्वीकार, खुला किस्मत का ताला।
शासन गौरव किस्तूरां ने, बालक ज्यूं संभाला।
अवसर को पहचान कर पचख लिया संथार।
संघर्षों की घाटियाँ, करके सारी पार।।

शासनश्री गुणमाला ने, गुण के फूल बटोर।
तन की ममता त्यागकर, बढ़ी लक्ष्य की ओर।
बढ़ी लक्ष्य की ओर, नहीं किंचित घबराई।
गुरु किरपा की बूँदों ने, मंजिल दिलाई।
जला आत्मबल का दीया, दिखी सामने भोर।
शासनश्री गुणमाला ने, गुण के फूल बटोर।।

तलेसरा तनुजा तरो, भव का पारावार।
मिले योग अनुकूल सब, हुई न देर लिगार।
हुई न देर लिगार, बनाया संप्रेरक इतिहास।
दिव्य लोक से कौन सा, खड़ा आपके पास।
वीर धरा की वीर सति, वंदन बारंबार।
तलेसरा तनुजा तरो, भव का पारावार।।

शपथ ग्रहण समारोह

कोयंबटूर।

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी के सान्निध्य में तेयुप कोयंबटूर का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि कोयंबटूर परिषद पूज्यप्रवर की आराधना करते हुए संघ हित कार्य करते रहे। साथ ही यह आशीर्वाद भी प्रदान किया कि तेयुप, कोयंबटूर उच्चतर स्तर पर पहुँचे। साध्वीश्रीजी ने कहा कि इस वर्ष हमारा चातुर्मास कोयंबटूर में है, तेयुप की नवगठित टीम खूब अच्छा काम कर धर्म आराधना करे।

नवमनोनीत अध्यक्ष मनोज बाफना एवं कार्यकारिणी सदस्यों को जैन संस्कारक निर्मल बेगवानी ने पद एवं गोपनीयता की शपथ, मदुरै तेरापंथ भवन में साध्वीश्री जी के सान्निध्य में दिलाई। मदुरै तेरापंथ सभा अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनोज बाफना का जैन दुपट्टा द्वारा सम्मान किया और बधाई प्रेषित की।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के आयोजन

रीछेड़

मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में श्री टांकडिया भेरव बावजी मंदिर के विशाल प्रांगण में महावीर जन्म कल्याणक मनाया गया। मुनि धैर्य कुमार जी और मुनि सिद्धप्रज्ञ जी की अगवानी में विशाल रैली गाँव के विभिन्न चौराहे से गुजरती हुई बाद में सभा में परिणित हुई।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनि प्रकाश कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा गीतिका से मंगलाचरण हुआ। अतिथि दीर्घा में संचय जैन (अध्यक्ष अणुविभा), अशोक डूंगरवाल (उपाध्यक्ष अणुविभा), शासनसेवी फतेहलाल मेहता, विनयचंद हिंगड़, गणेश कच्छारा, मदन कोठारी (सभाध्यक्ष रीछेड़), जीवनराम मीणा प्राधानाध्यापक आदि महानुभावों ने आसन ग्रहण किया।

मुनि संजय कुमार जी, मुनि प्रकाश कुमार जी एवं मुनि सिद्धप्रज्ञजी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मुनि धैर्य कुमार जी ने सुमधुर गीत द्वारा अपने विचार रखे। सभी अतिथियों का अंग वस्त्र व साहित्य से सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ उपासक सोहन कोठारी ने किया। आभार कांकरोली सभा मंत्री हिम्मत कोठारी ने किया। कार्यक्रम में कांकरोली, छापली, दिवेर, लाम्बोडी, चारभुजा, आमेट, गजपुर, मझेरा व अनेक गाँवों से श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थिति दर्ज कराई।

छापर

भिक्षु साधना केंद्र से महावीर जयंती के उपलक्ष्य में प्रभातफेरी निकाली गई। मुख्य मार्गों से होती हुई हाईस्कूल पहुँची। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के नवकार मंत्र से हुई। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। सेवा केंद्र व्यवस्थापक तपोमूर्ति पृथ्वीराज जी स्वामी ने कहा कि भगवान महावीर अहिंसा के मंत्र के दाता थे। भगवान महावीर ने क्षमा, अनेकांतवाद का सूत्र दिया।

कार्यक्रम में संयोजक सरिता सुराणा, तेमम अध्यक्षा एवं विनोद नाहटा थे। कार्यक्रम में मुनि हेमराज, कोमल कुमार, विजयसिंह सेठिया, सरिता सुराना, हुकमराम बड़बड़, प्रदीप सुराणा, चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मानक बुच्चा, खड़गसिंह दुधोड़िया, कविता भंसाली, कन्या मंडल पूर्व उपसंयोजिका सुविधा नाहटा ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति मंत्री विनोद नाहटा ने किया। संचालन चमन दुधोड़िया ने किया।

मदुरै

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित महावीर जयंती के कार्यक्रम में साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने कहा कि भारत की पुण्य धरा पर अध्यात्म के आलोक का अवतरण हुआ। वह समुज्ज्वल अलौकिक आभा आज भी जन-जन के मानस को आलोकित कर रही है। भगवान महावीर की आभा चारित्रिक उज्ज्वलता प्रखर तप, साधना एवं अनाबाध ज्ञानधारा की प्रतीक थी।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर प्रेरणा के पुंज थे। साध्वी सन्मति प्रभाजी ने कहा कि भगवान महावीर विराट व्यक्तित्व के महानायक थे। साध्वी प्रबोध यशा जी ने अपनी भावांजलि एक गीत के माध्यम से प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला, तेयुप की गीतिका, कोयंबटूर से पधारे सभा अध्यक्ष प्रेमचंद सुराणा, कुंभकोनम से धर्मीचंद छलानी, महिला मंडल की गीतिका, कोयंबटूर से उपासिका सुशीला बाफना, मंत्री आरती रांका, मदुरै महिला मंडल एवं ज्ञानशाला द्वारा नाटक के द्वारा प्रस्तुति। तेरापंथ सभा मीडिया प्रभारी अशोक जीरावला, जैन समाज से डूंगरचंद श्रीश्रीमाल, पांडिचेरी से कनक सुराणा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मधु पारख एवं महिला मंडल मंत्री दीपिका फुलफगर ने संयुक्त रूप से किया। धन्यवाद ज्ञापन सभा के मंत्री धीरज दुगड़ ने किया। बाहर से पधारे पदाधिकारियों का सभा द्वारा सम्मान किया गया। साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

दक्षिण मुंबई

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' एवं सहवर्तिनी साध्वी प्रियंवदा जी के सान्निध्य में भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस मनाया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात छनक कच्छारा ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष शासनसेवी किशनलाल डागलिया ने भगवान महावीर के आदर्शों पर प्रकाश डाला।

साध्वी ऋद्धियशा जी ने वक्तव्य एवं साध्वी मृदुयशाजी ने कविता के माध्यम से विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल एवं ज्ञानशाला द्वारा प्रस्तुत दी गई। साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि भगवान महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे।

तेरापंथ महिला मंडल, ताराचंद बरलोटा, नरेंद्र बरमेचा, तेयुप, तेमम, देवेंद्र डागलिया, भावना धाकड़, राजश्री कच्छारा आदि ने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ किशोर मंडल ने भगवान महावीर के आदर्शों पर प्रकाश डाला। महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के चेयरमैन एस०के० जैन ने स्कूल के विषय में जानकारी दी। इस अवसर पर दक्षिण मुंबई के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। तेरापंथी सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने मुक्तक प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन तेयुप के अध्यक्ष पूरन चपलोत ने किया। संचालन सासध्वी प्रेरणाश्री जी ने किया।

चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

जयपुर।

आदर्श विद्या मंदिर मालवीय नगर में अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कोंटेस्ट के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता में कक्षा ३ से ६ के ५१ बच्चों ने भाग लिया। निबंध लेखन प्रतियोगिता भी करवाई गई। इस कोंटेस्ट की संयोजिका अनामिका जैन ने कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा आदर्श विद्यालय प्रधानाचार्य मुरारी एवं सीमा के सान्निध्य में किया गया।

सभी बच्चों के साथ अणुव्रत गीत गाया गया। गीतिका के बीच में प्रश्न पूछे तथा सही जवाब देने वाले बच्चों का सम्मान किया गया। सभी बच्चों को पेंसिल कलर बाँटे गए। चित्रकला प्रतियोगिता के दो जजेज बनाए गए रीना गोयल एवं कल्पना अरोड़ा। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय बच्चों के नामों की घोषणा की गई तथा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के प्रायोजक रामवतार अग्रवाल। जिनका सहयोग पूरे कार्यक्रम में रहा। रीना गोयल ने जीवन-विज्ञान के प्रयोग बच्चों को करवाए। इस कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के विभिन्न पदाधिकारी भी उपस्थित थे। मंत्री जयश्री सिद्धा, आशा नीलू टाक, मधुर सोगानी, राजेंद्र जैन तथा विद्यालय के विभिन्न शिक्षकगण। प्रधानाचार्य को अणुव्रत आचार संहिता का बोर्ड भेंट किया गया। अणुव्रत समिति द्वारा अंत में सभी को साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

तेयुप वाटिका का शुभारंभ

महरौली, दिल्ली।

तेयुप दिल्ली के महरौली में तेयुप वाटिका का शुभारंभ संस्कारक सुभाष दुगड़ व संजय संचेती ने मंगल मंत्रोच्चार व विधिपूर्वक संपादित करवाया।

नमस्कार महामंत्र व भगवान महावीर स्वामी की स्तुति के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। संस्कारक संजय ने तेयुप दिल्ली व पधारे हुए गणमान्य व्यक्तियों का आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना, तेयुप परामर्शक पुखराज सेठिया, अणुव्रत न्या से शांति जैन तेयुप के पूर्व अध्यक्ष पुखराज लोढ़ा, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष विकास बोथरा सहित तेयुप पदाधिकारिगणों एवं गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही।

विवाह संस्कार

राजराजेश्वरी नगर।

मनन डागा सुपुत्र कनक कुमार डागा संग चांदनी आंचलिया सुपुत्री नवरतनमल आंचलिया का विवाह जैन संस्कार विधि द्वारा मनोज पटावरी के निवास स्थान पर अभातेयुप संस्कारक दिनेश मरोठी ने पूर्ण विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया। तेयुप मंत्री विकास छाजेड़ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस अवसर पर दोनों परिवार के परिजनों के साथ तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, मंत्री विकास छाजेड़, जैन संस्कार विधि के प्रभारी गौतम नाहटा, सहप्रभारी सौरभ दुगड़ एवं अच्छी संख्या में गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

सायरा निवासी, सूरत प्रवासी जीतमल डालचंद मेहता का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, मीठालाल भोगर ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

जीतमल, अमृतलाल व तेयुप कार्यकारिणी सदस्य व उनके सभी परिजनों ने जैन संस्कार विधि को उपयोगी बताया तथा सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। तेयुप, सूरत की ओर से दीपक मेहता ने आभार व्यक्त किया और मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

कालूलाल, विमल, धीरज कोठारी का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक प्रकाश धींग, विकास पितलिया, दिनेश बागरेचा ने समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्रक स्थापित कर गृह प्रवेश संपादित किया।

कोठारी परिवार की ओर से विमल कोठारी ने तेयुप, अहमदाबाद एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

स्वर्ण सोपान (सीढ़ी) आरोहण संस्कार

सूरत।

चुरू निवासी, सूरत प्रवासी पूनम चंद बरड़िया के पौत्र व ऋषभ-नेहा के पुत्र जिसकी परदादी कंचन देवी बरड़िया को स्वर्ण सोपान (सीढ़ी) आरोहण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किया। पूनमचंद ने उपस्थित परिवार जन का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

बालोतरा।

गोतमचंद, किशोर कुमार, पृथ्वीराज और रमेश कुमार ओस्तवाल के नव निर्मित प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पुष्पराज कोठारी द्वारा कार्यक्रम किया गया। संस्कारक ने मंत्रोच्चार द्वारा संपूर्ण विधि से कार्यक्रम संपादन करवाया।

तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, कोषाध्यक्ष सुनील लुणिया और संगठन मंत्री खुशाल ढेलड़िया ने परिवारजन को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 - 22 मई, 2022

✦ *अणुव्रत कहता है–तुम परलोक को मानो या मत मानो, आचरण को अच्छा बनाने का प्रयास करो, जीवन में नैतिकता को धारण करो, जीवन उन्नत बन सकेगा।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर जयंती के विविध आयोजन

भगवान महावीर जन्म कल्याणक का आयोजन

राजलदेसर।

भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक दिवस साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात ममता कुंडलिया ने मंगलाचरण किया। साध्वी मंगलप्रभा जी ने कहा कि दिगंबर व श्वेतांबर हर परंपरा में जन्म कल्याणक मनाया जाता है। भगवान महावीर का मूलभूत सिद्धांत है–सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह। इन तीनों पर संक्षेप में प्रकाश डाला।

इस अवसर पर साध्वी प्रणवप्रभाजी एवं साध्वी सुमनकुमारी जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने गीतिका के द्वारा भगवान महावीर की अभिवंदना की। ज्ञानशाला के बच्चों ने सुंदर नाटिका की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा द्वारा प्रभातफेरी का आयोजन किया गया जिसमें सभा, महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल, किशोर मंडल, अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं राम० उ०मा० विद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में साध्वी मंगलप्रभा जी की सहवर्ती साध्वी सुमन कुमारी जी की दीक्षा स्वर्ण जयंती का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रभा जी ने साध्वी सुमन कुमारी जी के प्रति प्रमोद भावना की अभिव्यक्ति देते हुए गुरुदेवश्री के प्रति स्वर्गीया शासनश्री साध्वी फूलकुमारी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी प्रणवप्रभाजी एवं साध्वी समप्रभाजी ने मंगलभावना व्यक्त की। पवन बोथरा के द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया गया तत्पश्चात साध्वी सुमन कुमारी जी ने अपने ५०वें दीक्षा दिवस पर अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

सभा अध्यक्ष नौरतनमल बैद 'मूथा', महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल ने साध्वीजी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। छापर से समागत राकेश दुधेड़िया, तारा देवी दुधेड़िया, रेशमी बोहरा, अनीता बैद, दिलीप सुराणा, सौभाग सुराणा ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभाजी द्वारा किया गया।

भगवान महावीर सत्य के महान उपासक थे

भीम।

भगवान महावीर के जन्म जयंती के उपलक्ष्य में तेरापंथ भवन में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वी प्रांजलप्रभाजी, साध्वी रुचिप्रभाजी व साध्वी गौतमप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित हुए कार्यक्रम का मंगलाचरण सिद्धि कोठारी ने किया।

साध्वी रुचिप्रभाजी व साध्वी गौतमप्रभाजी ने गीत के संगान से वातावरण को महावीरमय बना दिया। भगवान महावीर की अभ्यर्थना स्वरूप आयोजित इस जन्म कल्याणक कार्यक्रम में साध्वी प्रांजलप्रभाजी जी ने कहा कि भगवान महावीर सत्य के महान उपासक थे, सत्य के पर्याय थे। उन्होंने कहा कि संसार में जो महावीर के बताए धर्म को मानने वाले हैं, जैन हैं वे भी महावीर के पदचिह्नों पर चलने का संकल्प करें, उनके द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के मार्ग पर चलने का संकल्प लें तो दुनिया की तस्वीर बदल सकती है।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप, भीम अध्यक्ष महेंद्र कोठारी ने किया।

प्रभातफेरी व जुलूस

कार्यक्रम से पूर्व सकल जैन समाज द्वारा प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। प्रभातफेरी में साध्वीश्री ने कहा कि आज का दिन आत्मचिंतन, आत्म जागरण का दिन है। हम आत्मावलोकन करें कि हम प्रभु महावीर को केवल मानते हैं या प्रभु महावीर की मानते भी हैं। साध्वीश्री जी ने समता के पुरोधा भगवान महावीर के जीवन को सामने रखकर अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों में समभाव रखने की प्रेरणा दी।

भगवान महावीर के सिद्धांतों को जीना चाहिए

अयनावरम, चेन्नई।

जैन महासंघ के तत्त्वावधान में श्वेतांबर तेरापंथ, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक एवं दिगंबर समुदाय की विशाल जनमेदिनी की समुपस्थिति में पंडित पूज्य आचार्यश्री मेघदर्शन सूरीश्वरजी एवं श्रमणवृंद और साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञाजी एवं श्रमणीवृंद के सान्निध्य में दादावाड़ी के विशाल प्रांगण में भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव चारों तीर्थ के द्वारा मनाया गया।

आचार्य मेघदर्शन सूरीश्वरजी ने कहा कि हमें महावीर के सिद्धांतों को अपनाकर आने वाले पीढ़ी को संस्कारवान बनाना चाहिए।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि हमें भगवान महावीर के सिद्धांतों को जीना चाहिए। साध्वी सिद्धिश्रीजी ने कहा कि महावीर के बारे में जितना कहा जाए कम है। उनकी शक्ति, साधना को जीवनपर्यन्त अपनाते जाएँ।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आज महावीर का जन्मदिन ही नहीं अहिंसा, मैत्री, दया और प्रेम का जन्म दिन है। महावीर सत्य के पर्याय थे। पुरुषार्थ के द्वारा जगा हुआ मानव ही महावीर बन सकता है।

मुख्य अतिथि विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुकमचंद जैन सांवला ने महावीर के सिद्धांतों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता बताते हुए कहा कि उनके बताए मार्ग पर चलने से व्यक्ति के स्वयं का कल्याण तो होता ही है। अहिंसा, अपरिग्रह को आत्मसात करने से समाज, देश ही नहीं अपितु विश्व की अनेकानेक समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाता है।

इससे पूर्व प्रातः अरिहंत शिवशक्ति, पेरीयमेडु, चुल्ले से अहिंसा रैली, वरघोड़े का आयोजन किया गया। वरघोड़े को अध्यक्ष राजकुमार बड़जाज्या, श्रेष्ठीवर्य रमेश कुमार मूथा एवं नवकारसी के लाभार्थी भरत कुमार एवं पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल सिंघवी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसमें भगवान महावीर के जीवन-दर्शन से संबंधित जीवन झाँकियों के साथ अहिंसा घोष से पूरा वातावरण अहिंसामय बन गया।

नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण से मंगल शुरुआत हुई। महासंघ द्वारा जैन समाज की विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इस अवसर पर तमिलनाडू सरकार के मंत्री पी०के० शेखर बाबू, एमएलए सितारामुलू, काउंसलर अभिषेक नाहर, राजेश जैन रंगीला, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य प्यारेलाल पितलिया एवं प्रवीण टाटिया, महासंघ के मार्गदर्शन सज्जनराज मेहता सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। धन्यवाद जैन महासंभ के उपाध्यक्ष विमल चिप्पड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन बिपिन सतावत ने किया।

महावीर जयंती कार्यक्रम

पातड़ा (पंजाब)।

साध्वी प्रतिभाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, तुलसी नगर में महावीर जयंती मनाई गई। जैन-अजैन सभी की अच्छी उपस्थिति रही। मूनक आतद गाँव के व्यक्तियों ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। साध्वीश्री जी ने कहा कि तीर्थंकर के जन्म के समय सभी को सुख की अनुभूति होती है। महान आत्मा के महान कार्य होते हैं। वैभव की वृद्धि जन्म से पूर्व ही होने लगी। लेकिन भगवान को भौतिक सुविधाएँ कभी नहीं लुभाई। उनके चरण बढ़ गए राग से विराग की ओर, भोग से त्याग की ओर। और साधना में कष्टों को सहते-सहते चढ़ गए मुक्ति के सोपान।

साध्वी विकासप्रभाजी ने उनके बचपन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे बचपन से ही निर्भय थे। उन्होंने बचपन में खेल के समय सर्प को हाथ से पकड़ एक तरफ फेंक दिया।

साध्वी नीतिप्रभाजी ने कार्यक्रम का संयोजन किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण सुखराज जैन ने किया, महिला मंडल द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष कोषाध्यक्ष ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। रतनलाल, उषा जैन ने गीत के माध्यम से अपनी भावना रखी। कन्या मंडल व महिला मंडल ने कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों की सुंदर प्रस्तुति हुई।

महावीर जन्मोत्सव

चलथान

भगवान महावीर का जन्मोत्सव महावीर भवन, चलथान से तेरापंथ भवन तक जैन समाज के सभी सप्रंदाय द्वारा सामुहिक जुलूस का आयोजन किया गया। जुलूस के आयोजन के पश्चात तेरापंथ भवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बडोदरा पुलिस विभाग से एस०पी० विशाखा जैन विशेष अतिथि के रूप में एवं मनीष शाह भारतीय जनता पार्टी, सूरत जिला युवा महामंत्री गरिमामय अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। नवकार मंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

तेरापंथ सभा वरिष्ठ श्रावक तेजमल नौलखा द्वारा कार्यक्रम में पधारे सभी महावीर भक्तों का स्वागत अभिनंदन किया। महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा महावीर अष्टकम् के उच्चारण से मंगलाचरण किया गया।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला बच्चों द्वारा प्रभु महावीर के जन्मोत्सव पर महिला मंडल द्वारा सुंदर नाटक प्रस्तुत किया गया। तेयुप के सभी सदस्यों द्वारा प्रभु महावीर की सामुहिक आरती का संगान किया गया। कार्यक्रम में सुरेश पितलिया, किरण मेहता, निशा नौलखा, वंदन दुगड़, नैतिक बड़ोला द्वारा प्रभु महावीर के जीवन पर अपनी विचारों की अभिव्यक्ति एवं गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन तेयुप अध्यक्ष ज्ञान दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा मंत्री सुरेशचंद्र पितलिया ने किया।

भगवान महावीर जन्म जयंती समारोह का आयोजन

हासन।

तेरापंथ सभा भवन में सकल श्वेतांबर जैन समाज की अगुवाई में महावीर जयंती का कार्यक्रम रखा गया। हासन नगर में भगवान महावीर का वरघोड़ा बड़े ही धूमधाम से निकाला गया। उसके बाद सकल जैन श्वेतांबर समाज की तरफ से २५०० लोगों के लिए अन्ना संतर्पण का कार्यक्रम रखा गया। सभी ने अपने-अपने गणवेश में पधारकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

इस अन्ना संतर्पण कार्यक्रम की शुरुआत हासन के शासक मानप्रीतम गौड़ा, डिप्टी कलेक्टर आर० गिरीश, पुलिस सुप्रीडेंट श्रीनिवास गौड़ा, हासन की प्रथम प्रजा मोहन ने इस कार्यक्रम की शुरुआत की। बीजेपी के यूथ आइकन पुनीत गौड़ा उपस्थित रहे। तीनों समाज के अध्यक्ष-मंत्री की उपस्थिति रही।

भगवान महावीर के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक

भवानीपटना।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक मनाया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि प्रभु महावीर के विचार एवं सिद्धांत आज पूरी दुनिया में मान्य हो रहे हैं। स्वतंत्रता, सापेक्षता, समन्वय, सहयोग, समता और सहिष्णुता–ये सब महावीर दर्शन के मूल सिद्धांत रहे हैं, इन्हें स्वीकार कर चलना हर राष्ट्र के सभ्य नागरिक के लिए आज आवश्यक हो गया है। भगवान महावीर का जीवन दर्शन अपने आपमें विराट है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने समता की साधना करने के साथ समत्व भाव का उपदेश दिया। समता के बिना धार्मिक क्रिया केवल क्रिया बनकर रह जाती है। मोक्ष का अधिकारी वही व्यक्ति हो सकता है जिसकी भाव शुद्धि हो। भगवान महावीर के सिद्धांत को आज जितना व्यक्ति आत्मसात करेगा उतना ही शांति से जीवन जी सकेगा।

कार्यक्रम का शुभारंभ महावीर अष्टकम् से हुआ। सभा अध्यक्ष महेंद्र जैन ने सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला भवानीपटना ने भगवान महावीर की झाँकी प्रस्तुत की। तेयुप अध्यक्ष चंदन जैन, ओडिशा प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश जैन, महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी जैन, कांटाभाजी सभाध्यक्ष विनोद जैन, कांटाभाजी तेयुप अध्यक्ष हेमंत जैन, बेलपाड़ा, तेयुप मंत्री विकास जैन, खरियारोड की चेयरमैन सोनिया जैन, टिटलागढ़ की चेयरमैन ममता जैन ने अपने भाव व्यक्त किए। उत्केला तेयुप मंत्री सौरभ जैन, कांटाभाजी महिला मंडल, अंजू जैन, भवानी पटना महिला मंडल, महेंद्र सिंघी ने गीत के माध्यम से प्रभु महावीर को श्रद्धांजलि दी। आभार ज्ञापन सभा मंत्री पंकज जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन मतता जैन ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण के उपलक्ष्य में

संत परंपरा के आदर्श : आचार्यश्री महाश्रमण

● साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा ●

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण भारतीय संत परंपरा के आदर्श पुरुष हैं। समता, मैत्री, करुणा, परोपकार, सहनशीलता व विनम्रता जैसे गुणों के वे समवाय हैं। दर्शन, न्याय, तत्त्वज्ञान, आगम आदि के पारगामी हैं। सहज, शांत, निर्मल पद्म सरोवर जैसा उनका व्यक्तित्व ज्ञान एवं गुण कमलों की सौम्य गंध से महकता हुआ प्रतीत हो रहा है।

एवं हवइ बहुस्सुए

उत्तराध्ययन आगम के ग्यारहवें अध्ययन में बहुश्रुत की सोलह विशेषताएं काव्यात्मक शैली में निरुपित की गई हैं। 'बहुश्रुत' शब्द केवल ज्ञान का वाचक नहीं है। इसमें श्रुतधर पुरुष के व्यक्तित्व की नाना विशेषताएं समाहित हैं।

आगम निर्दिष्ट एवं हवइ बहुस्सुए के मूर्त्त रूप है परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी। भारतीय संस्कृति में जीवन में सोलह संस्कार, शीलवती नारी के सोलह श्रृंगार, चंद्रमा की सोलह कलाएं आदि का विशेष उल्लेख आता है। आचार्यश्री महाश्रमण का जीवन भी बहुश्रुत की सोलह विशेषताओं के संगम है।

निर्मलता

आचार्यश्री महाश्रमणजी का व्यक्तित्व पारदर्शी है। शंख स्वयं उज्ज्वल होता है और दूध भी। शंख में निहित दूध की भांति बहुश्रुत में धर्म, कीर्ति और श्रुत सुशोभित होते हैं। आचार्यश्री महाश्रमण में भी धर्म, कीर्ति और श्रुत शंख में निहित दूध की भांति शोभायमान है।

जागरूकता

प्रशिक्षित अश्व न तोपों की ध्वनि से डरता है और नहीं खड़खड़ाहट सुनकर भागता है। कंबोज का घोड़ा चाबुक के प्रहार के बिना ही तीव्र वेग से अभीष्ट की दिशा में दौड़ता है, वैसे ही बहुश्रुत पुरुष सतत जागरूक लक्ष्य की ओर प्रवृत रहता है। आचार्यश्री महाश्रमण भी निरंतर जागरूकता से गण-संचालन करते हुए साधना में निरत है।

शौर्य

वीर यौद्धा विपरीत परिस्थितियों से आहत हुए बिना डटा रहता है। वैसे ही बहुश्रुत उभयतः नंदी घोष से अजेय होता है। भीषण गर्मी में सुदूर कच्छ प्रदेश की यात्रा हो या काजीरंगा के अभयारण्य व नागालेंड की दुर्गम यात्रा, काठमांडों का भूकंप हो या कोरोना की वैश्विक आपदा- आचार्यश्री महाश्रमण की यात्रा बिना डरे, बिना घबराए अविराम गतिमान है। हर कठिन परिस्थिति में भी अविचल रहकर गतिमान रहना उनके शौर्य की निशानी है।

अप्रतिहत

बहुश्रुत को हाथी की भांति बलवान एवं अप्रतिहत कहा गया है। साठ वर्षीय हाथी पूर्ण बलवान होता है। बहुश्रुत भी अपने ज्ञान के कारण पराजित नहीं होता। आचार्य महाश्रमण के अप्रतिहत सामर्थ्य का ही प्रभाव है कि उनके उपपात में आने वाला स्वतः उनका हो जाता है। अल्प परिचित या अपरिचित व्यक्ति भी उनके चरणों में नत हो जाता है।

निर्वाह कुशल

बहुश्रुत युगाधिपति वृषभ की भांति भार बहन करने में दक्ष होता है। आचार्यश्री महाश्रमण भी विशाल तेरापंथ धर्मसंघ के गुरुत्तर भार का कुशलता पूर्वक निर्वाह कर रहे हैं। समूचे जैन समाज द्वारा उन्हें जो आदर व सम्मान मिल रहा है, वह उनके कौशल की फलश्रुति है।

दुष्प्रधर्ष

बहुश्रुत सिंह की भांति अनाक्रमणीय होते हैं। अन्य मतावलम्बी उन पर वैचारिक आक्रमण नहीं कर पाते। आचार्यश्री महाश्रमण अपने विलक्षण गुणों के कारण दुष्प्रधर्षणीय है। सन् २०१४ में दिल्ली में सामुहिक क्षमापना के अवसर पर क्रांतिकारी संत तरुणसागरजी के उद्गार वस्तुतः मननीय है। उन्होंने आचार्यों एवं संत समुदाय के समक्ष स्पष्ट कहा कि हम तो सब श्रमण है, महाश्रमण तो आप एक ही हैं।

अपराजेय

शंख, चक्र और गदा को धारण करने वाले वासुदेव अपराजेय होते हैं। वे अपनी अपरिमित शक्ति के कारण तीन खंड के एक छत्र स्वामी होते हैं। आचार्यश्री महाश्रमण अपने श्रद्धाबल, धृतिबल एवं आचारबल के कारण सर्वत्र सम्मान्य है अपराजेय है।

ऋद्धिसंपन्न

षट्खंडाधिपति चक्रवर्ती नाना ऋद्धियों से सुशोभित होते हैं। अष्टगणिसंपदा के स्वामी आचार्य महाश्रमण अध्यात्म ऋद्धियों से संपन्न है। उनकी वचन सिद्धि के अनेक उदाहरण योगज विभूतियों के स्वयंभू उदाहरण हैं।

दिव्य शक्तिधर

बहुश्रुत इन्द्र की भांति दिव्य शक्तियों से संपन्न होते हैं। जैसे सुखूंद के मध्य इंड सुशोभायमान होते हैं। आचार्य भी शिष्य परिवार के मध्य सुशोभित होते हैं। आचार्यश्री महाश्रमण भी दिव्य शक्तियों एवं दिव्य आभामंडल के कारण शिष्य समुदाय के मध्य दीपित हो रहे हैं।

तेजस्वी

सूर्य अपने तेज से जगत के अंधकार को हरता है। उसका तेजोदीप्त आभावलय संसार में नई ऊर्जा व नई चेतना का संचार करता है। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण अपने तपस्तेज से जगत के पाप, ताप और संताप का हरण कर अध्यात्म की राह दिखाते हैं।

सहज सौम्य

नक्षत्रगण से परिवेष्टित चंद्रमा अपनी सोलह फलाओं से नभोमंडल की शोभा वृद्धिगत करता है। सर्वकला युक्त पूर्ण चंद्र की भांति आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी सौम्यता से संसार में शीतलता भर रहे हैं।

श्रुतसंपन्न

सामुदायिक अन्नभंडार में नाना प्रकार के अनाज सुरक्षित होते हैं। उसी प्रकार बहुश्रुत भी कोष्ठागार की भांति श्रुत से परिपूर्ण होते है। आचार्यश्री महाश्रमण का बाहुश्रुत्य सबको विस्मित करने वाला है।

आदर्श

बहुश्रुत जंबू वृक्ष की भांति सब साधुओं में श्रेष्ठ होता है। जंबू वृक्ष के फल की भांति उनका ज्ञान संजीवनी का काम करता है। आचार्यश्री महाश्रमण भी संत समुदाय के लिए आदर्श हैं।

ज्ञान की निर्मलता

नदियों में सीता नदी को श्रेष्ठ माना जाता है। निर्मल जल युक्त विशाल सीता नदी की भांति आचार्यश्री महाश्रमण निर्मल ज्ञान से युक्त हैं। उनके अनाविल ज्ञान की पवित्र धाराएं पार्श्व में आनेवाले को भी पवित्र बनाती हैं।

अडोल और दीप्तिमान

बहुश्रुत को एक उपमा मेरु पर्वत की दी गई है। बहुश्रुत मंदर गिरि की भांति ज्ञान में अत्यंत स्थिर और ज्ञान के प्रकाश से दीप्त होते हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी का व्यक्तित्व भी ज्ञान के अतिशय से दीप्त हैं।

अक्षयकोष

स्वयंभूरमण समुद्र अक्षय जल युक्त व नाना रत्नों से परिपूर्ण है। आचार्यश्री महाश्रमणजी भी अक्षय ज्ञान व शक्ति से संपन्न हैं।

आगम सम्मत बहुश्रुत की इन उपमाओं से उपमित आचार्यश्री महाश्रमण के षष्टिपूर्ति के अवसर पर यही मंगल कामना करती हूं कि वे दीर्घ काल तक विश्व क्षितिज को अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की आभा से आलोकित करते रहें। जन्म दिवस पर श्रद्धासिक्त भावों सह भावप्रणति।

✦ *देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमणोस्तु मंगलं

● मुनि अमन कुमार ●

षष्टीपूर्ति मनावां मिलजुल, जन-मन हर्ष अपार।
वीतराग कल्प गुरु ध्याकर, हो जाए बेड़ा पार।।

नेमानंदन शत-शत वंदन करते हैं,
प्रवचन रसियों की झोली प्रभु भरते हैं,
मानवता के महामसीहा, की हो जय-जयकार।।

विनयशीलता, श्रमनिष्ठा, प्रभु की बेजोड़,
महातपस्वी, क्षमाशीलता की, हो ना होड़,
गुणग्राही, मृदुभाषी गुरुवर करते जन उद्धार।।

इतिहास नवीन रचाया, गुरुवर ने सुखकर,
है संकल्प मेरू सम, झुक जाते हैं सर,
'शासनमाता' को दर्शन दे, किया स्वप्न साकार।।

षष्टीपूर्ति की गुण गाथा, हम गाते हैं,
महाश्रमण की मूरत, हृदय बसाते हैं,
जुग-जुग जीवो हे गण नायक, 'संत अमन' उद्गार।।

लय : रोम-रोम में---

शत-शत वर्धापन

● साध्वी संघमित्रा ●

युगप्रधान प्रभु महाश्रमण का, अभिवादन वंदन है।
वर्धापन शत-शत वर्धापन, कोटि सहस्र नमन है।।

दिव्य पुरुष! तुमको पाकर, यह धरती धन्य हुई है,
तुमसे एक सपूत पूत से, यह कृत पुण्य हुई है।
युग की धारा मुड़ी तुम्हारे, चिंतन-मनन प्रखर से,
जन-जन मन को सींचा तुमने, करुणा के निर्झर से।
जहाँ टिके हैं पाँच देव के, धूलि बनी चंदन है।।

जिनवाणी के भाष्यकार तुम, तुलसी स्वर संधाता,
महाप्रज्ञ की गहन दृष्टि के, तुम सक्षम व्याख्याता।
अमृत पुरुष तुम्हारी वाणी, युग का अनुपम संबल,
रहो निरामय दिव्य देवते! मिले मनुजता को बल।
जहाँ टिकी नजरें गुरुवर की, हुआ नया सर्जन है।।

अमृत उत्सव के अवसर पर, साध्वीप्रमुखा वर का,
मान बढ़ाया 'शासनमाता', संबोधन दे गण का।
साध्वीजन बढ़ा सुयश, पा कृपा प्रसाद प्रभुवर का,
सकल संघ आनंदित, देख करिश्मा गुरु नजर का।
ज्योति चरण जय-युगप्रधान जय, कंठ-कंठ गुंजन है।।

दीर्घ अहिंसा पद यात्रा के, हे अनन्य सेनानी!,
फौलादी संकल्पी गुरुवर की नहीं जग में सानी।
ओजस्वी! उज्ज्वल तेजस्वी! वर वर्चस्वी विभुवर!
परम यशस्वी! महामनस्वी! महातपस्वी धृतिधर!
गुरुत्रय युगप्रधान पद भूषित, गौरवशाली गण है।।

पुण्यधरा सरदारशहर का, वातावरण सलौना,
चमक रहा प्रभु तेज पुंज से, जग का कोना-कोना।
युगप्रधान बरगदी छाँव में, हम कितने सौभागी,
काश सुदुर्लभ इस उत्सव में बनते हम सहभागी।
वर्धापन की मंगल वेला, आह्लादित कण-कण।।

अंबर को छू जाए, उतनी ऊँची भरो उड़ान।
जय घोषों से गूंजे धरती, जाग उठे इंसान।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 - 22 मई, 2022

✦ *जन्म के साथ प्राणी पीछे से क्या लेकर आया है, इसकी गहराई में कोई जा सके तो प्रकाश प्राप्त हो सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण के उपलक्ष्य में

समाधायक संत पुरुष को प्रणाम

❐ साध्वी डॉ. शुभ्रयशा ❐

जैन शासन में व्यवस्था की दृष्टि से समय-समय पर अनेक परंपराओ का उल्लेख प्राप्त है। उनमें मुख्य तीन परंपराएं रही हैं-

गणाचार्य - परंपरा
वाचनाचार्य - परंपरा
युगप्रधान - परंपरा

नंदी सूत्र में आर्य सुधर्मा से दूष्यगणी तक के आचार्यों की युगप्रधान के रूप में अभिवंदना की गई है। चूर्णिकार के अनुसार सूत्रकार ने २३ से ४३ तक की गाथाओं में नामोल्लेखपूर्वक युगप्रधान स्थविरों को नमस्कार किया है। वहां कुछ के विषय में विशेष विवरण भी प्राप्त होता है।

आर्य सुहस्ती तक के आचार्य गणाचार्य व वाचनाचार्य दोनों पदों का निर्वहन करते थे। वे गण की सारणा - वारणा भी करते तथा शैक्षणिक व्यवस्थाओं का दायित्व भी संभालते थे। कालांतर में कुछ कारणों से यह व्यवस्था बदल गई। गणाचार्य व वाचनाचार्य के कार्य विभक्त हो गए। चरित्र की सुरक्षा का दायित्व निभाने वाले गणाचार्य कहलाते तथा श्रुत की परंपरा को अक्षुण्ण रखने वाले आचार्य वाचनाचार्य कहलाते। जो आचार्य विशेष लक्षण युक्त व प्रभावशाली होते वे युगप्रधान कहलाते फिर चाहे वे गणाचार्य हो या वाचनाचार्य।

इस परंपरा के आधार पर कहा जा सकता है कि आचार्य महाश्रमण गणाचार्य भी है क्योंकि आप एक गण की एक संघ की चारित्र शुद्धि हित सारणा-वारणा करते हैं। आप श्रुतधर है इसलिए वाचनाचार्य भी हैं।

युगप्रधान के पीछे आपका अतीत और वर्तमान का कर्तृत्व बोल रहा हैं। आपके नेतृत्व में भी शिकरीय ऊंचाई है। युग का नेतृत्व वही कर सकता है जो युगीन संभावनाओं को वर्तमान परिधान दे सके। आप युगीन मूल्यों की स्थापना के लिए कृत संकल्प है। व्यक्ति व समाज के बीच स्वस्थ संबंध स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। हृदय परिवर्तन का प्रायोगिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। आपकी मुस्कान भरी स्नेहिल नजर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। इस आकर्षण का हेतु है आध्यात्मिक विकास, आभामंडल की पवित्रता। संयम की चेतना से भावित आपका कण-कण सर्वजनहिताय-सर्वजसुखाय की मंगलकामना से ओतप्रोत है। आपके ये विशेष गुण ही आपश्री को युगप्रधान पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए मुखरित हो रहे हैं।

नंदी सूत्र में युगप्रधान आचार्यों की स्तुति में अंतिम युगप्रधान दूष्यगणि के सम्बन्ध में कहा गया है कि वे अनेक विशेषताओं के धनी थे। चूर्णिकार व टीकाकार ने भी अपनी सहमति प्रदान करते हुए कहा है- वे भाषा के ज्ञाता थे, प्रावचनिक रूप में पटु और शास्त्रार्थ के व्याख्यान में निपुण थे। वे अत्यंत शांत, मृदु और समाधिवान थे। आचार्य महाश्रमणजी भी दूष्यगणि की तरह अनेक विशेषताओं से अभिमण्डित है। भगवान् महावीर के २६२१ वर्ष बाद भी धरती पर ऐसे इन्सान का होना हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

भाषा के ज्ञाता - आचार्य महाश्रमण महावीर के भाषा सम्बंधित निर्देशों का उपयोग सहित जागरूकता से पालन करते हैं। आपके आदेश, आपके निर्देश, संघीय व्यवस्था की दृष्टि से कुछ कार्यों की अनापत्ति स्वीकृति, आपका इंगित, आपके सुझाव दसवे आलियं के सातवें 'वक्कसुद्धि' नामक अध्ययन में महावीर की वाणी के आधार पर युगप्रधान शय्यंभव ने जो भाषा सम्बंधित शिक्षण दिया है आर्यवर उसके पारगामी है।

प्रवचनपटु - आचार्य महाश्रमण एक कुशल प्रवचनकार है। आचार्य दूष्यगणि की तरह आपका प्रवचन चित्त को समाधि देता है। सामाजिक पारिवारिक और राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान देता है। आगमों की सरल व्याख्याएं सुनकर लोग अपने-आपमें धन्य, कृतपुण्य हो जाते हैं। प्रवचन के मध्य सप्रसंग संस्कृत-प्राकृत के श्लोक कहानियां, दृष्टांत और संस्मरण आदि एक ओर प्रवचन को सरल व सरस बना देते हैं वहीं दूसरी ओर श्लोकादि की व्याख्याएं दिल को छू जाती है। दूष्यगणि की तरह आपका प्रवचन भी लोग तल्लीनता से सुनते हैं। केवल सुनते ही नहीं तद्नुरूप आचरण करने का प्रयास भी करते हैं।

अंहिसा यात्रा के दौरान जब आप मार्ग में स्थित लोगों के लिए अल्प समय के लिए प्रवचन करते तब भी लोग उसे सुनकर खड़े-खड़े ही आपश्री के सन्मुख बीड़ी के बण्डल तोड़ देते, शराब छोड़ देते। यात्रा के हर पड़ाव पर आपने त्रिसूत्रीय कार्यक्रम के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराईयों के दरवाजे खटखटाए। नशे में मूर्च्छित मनुष्य को जगाया। हिंसा में विश्वास रखने वाले लोगों के मन में अहिंसा मैत्री और करूणा के अंकुर प्रस्फुटित किए। भाई-भाई के बीच नफरत की दीवार को समाप्त करने का प्रयास किया।

मृद शांत और समाधिवान

आचार्य महाश्रमण का व्यवहार युगप्रधान आचार्य दूयगणि की तरह अत्यन्त मृदु है। आपका मन शांत व चित्त प्रशांत है। आपकी यह सन्तता धर्मगुरुओं के बीच आपको संत शिरोमणि के रूप में प्रतिष्ठित करती है। न केवल अहिंसा यात्रा के दौरान अपितु जीवन के हर मोड़ पर आपने ऐसे निर्णय लिए, ऐसे कार्य किए जिससे कभी भी आपकी सामाधि खण्डित नहीं हुई। इस प्रकार के निर्णयों में एक निर्णय था- 'मैं संघ का हूं संघ में रहूंगा।' आप जिन संतो के साथ में थे वे संत संघ से अलग हो रहे थे। अलग होने से पहले उन्होंने आपसे पूछा-मुनि मुदित बोलो तुम क्या करोगे? आपने बड़े शांत भाव से कहा- मैं संघ का हूं, संघ में रहूंगा। इस प्रकार विचलन भरी घड़ियों में समाधिवान व्यक्ति ही ऐसे निर्णय ले सकता है।

आपके इस एक निर्णय ने आचार्यों के दिल में अपना स्थान बना लिया। उसके बाद आपके विकास का ग्राफ वर्धमान होता गया।

पंडित दलसुख भाई मालवणियाजी ने आचार्य तुलसी के कर्तृत्व की मीमांसा करते हुए कहा था- आचार्य तुलसी को उनके संघ ने उन्हें युगप्रधान पद दिया। यह निरर्थक नहीं है केवल प्रशंसा नहीं हैं। आचार्य महाश्रमणजी के सम्बंध में भी मैं कहना चाहूंगी कि ३० जनवरी २०२२ शासनमाता साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने आपश्री के लिए युगप्रधान पद की उद्घोषणा कर संघ को कृतार्थ कर दिया। उद्घोषणा सुनकर चतुर्विध धर्मसंघ में आनंद की लहर छा गई। कृतज्ञता के भाव से भरा तेरापंथ धर्मसंघ मानो कृतार्थ हो गया। इस संदर्भ में अनेक धर्म गुरुओं, राजनयिकों, सामाजिक संगठनों से जुड़े लोगों के अनुमोदन भरे पत्र पढ़कर सीना गौरव से फूल गया।

आपका आगम संपादन का गुरुत्तर कार्य, आपकी सापेक्ष दृष्टि, अनाग्रही वृत्ति, समन्वय की मनोवृत्ति इन सबसे ऊपर गुरुओं के प्रति समर्पण व आत्मा के प्रति विनम्रता आपकी एक विशिष्ट पहचान बनाती है। एक सम्प्रदाय के आचार्य होकर भी सम्प्रदायातीत चेतना का विकास आपको अनेक रूपों में व्याख्यायित करता है।

आपकी मुस्कानः एक खुशी
आपका मौनः एक दिशा।
आपका संकेतः एक दर्शन
आपकी नाः एक बोध।
आपकी हाः एक समाधान देती है।

ऐसे समाधायक युगप्रधान सन्त पुरुष को प्रणाम।

युगप्रधान - आचार्य महाश्रमण

❐ साध्वी मधुरेखा ❐

तेरापंथ धर्मसंघ प्राणवान धर्मसंघ है। इस धर्मसंघ की नींव में सेवा, समर्पण, वात्सल्य, अनुशासन, व्यवस्था तथा मर्यादा के पत्थर रखे हुए हैं। जिन पर तेरापंथ का विशाल प्रासाद खड़ा है। एक आचार्य, एक विचार, एक समाचारी—इस धर्मसंघ की पहचान है। अनुशासन की हवा मर्यादा का नीर एवं व्यवस्था की अनुकूल धूप मिलने पर संघ विरुआ निरंतर विकसित होता रहा है।

कीर्तिगाथा, युगपुरुष, धर्मक्रांति के सूत्रधार आचार्य भिक्षु ने अपने नन्हे-नन्हे हाथों से जो पौध लगाई उसे उत्तरवर्ती आचार्यों ने सिंचन देकर आज वट वृक्ष बना दिया। विश्व क्षितिज पर तेरापंथ धर्मसंघ की अनुशासित मर्यादित व्यवस्थित एवं संगठित रूप में पहचान बन गई है। जिसका संपूर्ण श्रेय तेरापंथ की यशस्वी एवं वर्चस्वी आचार्य परंपरा को जाता है। इस धर्मसंघ के संवर्धन में आचार्यों एवं बलिदानी साधु-साध्वियों व श्रावक-श्राविकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। संघ विकास में समय-समय पर ऋतंभराप्रज्ञा के महाधनी आचार्यों का उर्वर मस्तिष्क हमेशा नए-नए उन्मेष लाता रहा है।

तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा में वर्तमान में आचार्य महाश्रमण जी १७वें आचार्य हैं। आचार्यप्रवर ने जिस उम्र में दीक्षा स्वीकार की, उस उम्र में बालक अपना दायित्व नहीं संभाल पाता है। जिस उम्र में बच्चे आँखें मलते हैं तुम फकीर बन गए और आज तेरापंथ धर्मसंघ की तकदीर बन गए। प्रखर प्रतिभा के धनी आचार्यप्रवर ने बहुत शीघ्र ही धर्मसंघ में मेधावी मुनि के रूप में अपनी पहचान बना ली। गौरवर्ण, तेजस्वी नेत्र, सहज मुस्कान, वाणी में माधुर्य, करुणा सागर ये आपश्री की बाह्य पहचान है। विनम्रता, सहजता, सरलता, मृदुता, कोमलता, समता, सहिष्णुता, स्थितप्रज्ञता अंतरंग पहचान है। इन मानक बिंदुओं के कारण गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी एवं प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का ध्यान आपश्री पर केंद्रित हुआ।

दो-दो आचार्यों का वरदहस्त, पावन सान्निध्य आपश्री के जीवन की अमूल्य निधि बन गई। महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठित होते ही यात्राओं का दौर शुरू हो गया। अनेक यात्राओं में सिवांची-मालाणी की यात्रा अभूतपूर्व रही थी। वहाँ पर श्रम की बूँदें जहाँ-जहाँ गिरी आज वहाँ-वहाँ त्याग-वैराग्य की फसलें लहरा रही हैं। ज्यादा सुनना, कम बोलना आचार्यप्रवर की विरल विशेषता है।

आचार्यपद पर अभिषिक्त होते ही जो सुदीर्घ यात्राओं का सिलसिला शुरू हुआ। वह न केवल तेरापंथ धर्मसंघ के लिए अपितु पूरे जैन समाज तथा समूची मानव जाति में नया कीर्तिमान एवं अमिट हस्ताक्षरों का दस्तावेज बन गया।

पूर्वांचल से दक्षिणांचल की अहिंसा यात्रा ने नए-नए विकास के द्वार उद्घाटित किए। अहिंसा यात्रा के दौरान कभी भूकंप, कभी तूफान, कभी मूसलाधार वर्षा, कभी बर्फीली हवाएँ, कभी कीचड़, कभी प्रचंड गर्मी, कभी सर्दी, कभी कंटीली पगडंड़ियाँ, कभी जंगल, कभी राजपथ, कभी पहाड़िया, कभी समंदर, कभी समतल भू-भाग, इन सारी परिस्थितियों में आचार्यप्रवर की साधना अक्षुण्ण रही। अनेक देशों तथा प्रांतों की अविस्मरणीय यात्रा के मध्य तीनों संकल्पों की गूँज होती रही।

आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से लाखों लोगों का जीवन उबारा, संवारा तथा चैतन्य को जगाया। आचार्यप्रवर की अमृत देशना की गूँज मजदूर की झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पहुँच गई। आपश्री का एक प्रवचन सुनने मात्र से व्यक्ति की जीवन दिशा तथा दशा बदल जाती है। आपश्री की अहिंसा यात्रा से केवल सामान्यजन ही नहीं विशिष्ट व्यक्तित्व भी बहुत प्रभावित हुए, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है २७ मार्च, २०२२ को 'अहिंसा यात्रा समापन समारोह' जिसमें अनेक प्रांतों के मुख्यमंत्रियों ने तथा केंद्रीय नेताओं ने अहिंसा यात्रा की यशस्वी गाथाएँ प्रस्तुत की तथा आचार्यप्रवर के राष्ट्रीय योगदान की उदात्त शब्दों में अभिव्यक्ति दी।

असाधारण संघमहानिदेशिका महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री जी के ५०वें चयन दिवस के उपलक्ष्य में चयन दिवस, अमृत महोत्सव चंदेरी की पुण्य धरा पर मनाया जा रहा है। उस नयनाभिराम भव्य कार्यक्रम को लाखों लोग टी०वी० पर तथा साक्षात् देखकर आनंदानुभूति कर रहे थे। उस अवसर पर असाधारण महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री ने करबद्ध निवेदन किया कि भंते! मैं आज आपश्री से एक वरदान माँग रही हूँ, और वह वरदान है कि आपश्री ने सुदीर्घ यात्राएँ करके मानव जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। आपकी कीर्ति आपश्री का यश दिग्दिगंत में फैला है। अतः 'युगप्रधान' अलंकरण को स्वीकार कराने की कृपा कराएँ। युगप्रधान आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया। क्योंकि साध्वीप्रमुखाश्री जी के साथ चतुर्विध संघ साथ खड़ा हो गया। विधिवत युगप्रधान अलंकरण का भव्य कार्यक्रम आचार्यप्रवर की जन्मभूमि, कर्मभूमि, दीक्षाभूमि, सरदारशहर में आयोजित होने जा रहा है। मैं इस अवसर पर आचार्यप्रवर के तनुरत्न के प्रति कोटिशः मंगलकामना करती हूँ। आचार्यवर निरामय रहे। इस कलयुग में भैक्षव शासन तथा आचार्यप्रवर का कुशल नेतृत्व प्राप्त होना अत्यंत सौभाग्य की बात है। हमें युगों-युगों तक आचार्यप्रवर का पथ दर्शन प्राप्त होता रहे। इसी शुभाशंसा के साथ।

आचार्यश्री महाश्रमण जी को युगप्रधान अलंकरण के उपलक्ष्य में

तुम इसीलिए हो युगप्रधान

❐ साध्वी संघप्रभा ❐

'सपने नहीं संकल्प पूरे होते हैं' यह महज कथन नहीं बल्कि जीवन दर्शन है। आचार्य महाश्रमण का जिसे जीकर दिखाया है उन्होंने दुनिया को और जीवन की प्रयोगशाला में सिद्ध कर सबक सिखाया है। जन-जन को पाँव-पाँव चलकर नापा है। हर इंसान के मन को साधा है। इंद्रिय संयम द्वारा अपने कोमल तन को तथा सार्थक किया है। परार्थ और परमार्थ से अनुस्पूत हो एक-एक क्षण को। उनके जीवन का हर दिन सृजन का सलौना इतिहास है। उस इतिहास के हर पृष्ठ पर बिखरा पुरुषार्थ का प्रकाश है। उस प्रकाश की हर किरण में जागरण का जीवन विश्वास है। उस विश्वास में सन्निहित अध्यात्म का अमित उल्लास है। उस उल्लास की हर तरंग में छलकता उज्ज्वल अनागत का नया विकास है। उसी विकास की यशोगाथाओं से अनुगूंजित अनंत धरती और अनंत आकाश है।

वि०सं० २०६८ वैशाख शुक्ला दशमी भगवान महावीर कल्याणक महोत्सव के मंगल दिन जैन शासन के दीप्तिमान संप्रदाय तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम पट्ट पर विराजमान इस तेजोमय पुण्य पुरुष के कीर्तिमानों के शिखरारोहण का प्रथम सोपान है। आपके जीवन के पचासवें वर्ष के उपलक्ष्य में परम श्रद्धेया महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के निर्देशन में मनाया जाने वाला अमृत महोत्सव। उस विलक्षण उत्सव के मंगल अवसर पर सर्वप्रथम करवाया। आचार्य महाश्रमण ने चतुर्विध धर्मसंघ को पंचाचार निष्ठामृत का रसपान और साथ में प्रारंभ किया। जन-जन में अनुकंपा की चेतना के जागरण का अभियान। फिर हुए तुम्हारे चरण अपने परमाराध्य धर्माचार्य महाप्रज्ञ के वचनों को पूरा करने मेवाड़ मारवाड़ की ओर गतिमान। गति ने लिया प्रगति का उच्छवास। होने लगा तुम्हारी शासना में कुछ ही समय के अंतराल में आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ की संचालन शैली का युगपत्त अहसास। इस अहसास के साथ निखरने लगा तुम्हारे नेतृत्व में हिमालय सा स्थैर्य, धरती सा धैर्य, सागर सा गाम्भीर्य, सूरज सा तेज, चाँद सी शीतलता। प्रकृति की सभी उपमाएँ फीकी हैं, तुम्हारी विराटता के आगे। तुम्हारे जैसे सक्षम अनुशासता को पा सचमुच हमारे भाग्य जागे कि तुमने समय के साथ समयोचित कर्तव्यों को निभाने अगवानी। कृतज्ञता और उदारता तुम्हारी विशिश्टता की मुख्य निशानी। उसी की फलश्रुति है तुम्हारे द्वारा अपने परम धर्मोपकारी गुरुवरद्वय की स्मृति में जन्मशताब्दी वर्ष मनाने की घोषणा। सफल हुई तुम्हारी हर आयोजना। निष्पत्ति मूलक रही तुम्हारी हर परियोजना फिर चाहे अहिंसा यात्रा की संयोजना हो या विशाल तुलसी-महाप्रज्ञ वाङ्मय के प्रकाशन की समायोजना। 'जन-जन में जागे विश्वास-संयम से व्यक्तित्व विकास', 'ज्ञान चेतना करे प्रकाश-जागे संयम में विश्वास'—ये केवल व्यक्तित्व विकास वर्ष अथवा ज्ञान चेतना वर्ष के उद्घोष नहीं बल्कि साकार कर दिखाया तुमने अपनी वज्र संकल्पी चेतना से मुनि दीक्षा के शतक को पार कर तथा महाप्रज्ञ श्रुताराधना के सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम को प्रारंभ कर। धर्मसंघ में सम्यक् ज्ञान-दर्शन चारित्र रूप रत्नत्रय की आराधना का महान उपक्रम। पाषाणों को पिघला देने वाला तुम्हारा कठोर श्रम। अग्नि की ज्वालाओं को शांत कर देने वाला तुम्हारा उपशम। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में वीतरागी लक्ष्य निष्ठा का प्रतीक तुम्हारा सदाबहार समा सचमुच श्रमण संस्कृति को चरितार्थ कर रहा है। तुम्हारा नाम महाश्रमण। खड़ी कर दी इसीलिए इस श्रमण सम्राट ने आचार्य पदारोहण के चंद समय बाद ही अणुव्रतियों और महाव्रतियों की एक लंबी कतार। तुम्हारे कदमों की रफ्तार के सामने धीमी पड़ने लगी खुद वक्त की रफ्तार। किस शुभ मुहूर्त में लिखा होगा विधाता ने तुम्हारे भाग्य का लेख। ब्रह्मा भी चकराया होगा एक बार तुम्हारे पुरुषार्थ को देख। राजधानी दिल्ली से शुरू हुआ जो अहिंसा यात्रा का दौर। नैतिकता, सद्भावना, नशामुक्ति का संदेश गूंज उठा चारों ओर। निराशा के गहन तम में आशा की आई मानो उजली भोर। शांतिदूत के दर्शन पाकर खुशियों से नाच उठे प्यासे भक्तों के मन मोर। थमने लगा हिंसा-अपराधों का शोर। यूँ तो बेहद कड़क है, तुम्हारे अनुशासन की डोर तदापि अमन चैन आनंद से हर पल सराबोर। स्नेह और वात्सल्य से भीगा हर पौर।

एक ओर अभिनंदन, अभिवादन, संत शिरोमणि श्रमण संस्कृति के उद्गाता जैसे उच्चकोटि के अलंकरणों, राजकीय अतिथि, राष्ट्रसंत जैसे गरिमामय सम्मानों की बौछार तो दूसरी ओर समूची दुनिया को हिला देने वाले काठमांडू-नेपाल के भूकंप के झटकों तथा कोरोना की जानलेवा घातक लहरों का भयावह प्रहार फिर भी चरैवेती-चरैवेती का अकंप संकल्प लिए करते गए तुम धर कुंचा धर मंजला विहार, विहार के साथ जारी रहा धर्मोपकार। जगाते गए मानव-मानव में आध्यात्मिक संस्कार। कितनों की लगाई नैया पार। कितनों का किया आत्मोद्धार। आखिर आठ वर्ष की इस प्रलंब पद यात्रा का तीन देश (भारत, नेपाल, भूटान), बीस राज्यों समेत १८००० किमी कुल परिभ्रमण के पश्चात् जहाँ से हुआ श्रीगणेश वहीं हुआ उपसंहार। इस बीच न जाने कितने जुड़े नए आयाम। कितने हुए आश्चर्यकारी काम। उन सबका लेखा-जोखा युगप्रधान आचार्य महाश्रमण के नाम इसीलिए समूचा युग करता है इस युग प्रवर्तक को कोटिशः श्रद्धासिक्त प्रणाम।

मुख्य मुनि, साध्वीवर्या का मनोनयन उनकी दूरदर्शी सोच का परिणाम। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा के अमृत महोत्सव की जैन विश्व भारती के विशाल प्रांगण, चंदेरी की पुण्य धरा पर जबर्दस्त धूमधाम इस दुर्लभ अवसर पर दिया पूज्यप्रवर ने महाश्रमणी जी की ५० वर्षीय प्रशासनिक असाधारण संघ सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए शासनमाता का अलंकरण प्रवर प्रकाम। वह नजारा सचमुच बना कितना नयनाभिराम। और फिर किया स्वयं शासनमाता ने चतुर्विध धर्मसंघ समेत तुम्हारे द्वारा किए गए उत्कृष्ट संघप्रभावक जनोपकारक कर्मों के मूल्यांकनपूर्ण श्रद्धार्पण हेतु 'युगप्रधान' के गौरवशाली अलंकरण की स्वीकृति का अनुरोध। मानकर शासनमाता का फरमान, तुरंत किया तुमने स्वीकृति सूचक आह्वान। युगप्रधान आचार्य महाश्रमण और शासनमाता महाश्रमणी के जय घोषों से हो उठा दिगदिगंतर गुंजायमान। एक-एक दिन में ३५ से ४७ किमी के लंबे-लंबे विहार कर साध्वीप्रमुखाश्री जी को दिल्ली में दर्शन सेवा का दिया लाभ। फिर अनशन प्रत्याख्यान आलोयणापूर्वक पहुँचा दिया उन्हें परमधाम। अमर हो गई १७ मार्च की वह शाम। यकायक एक युग ने लिया विराम। यादों का चक्र घूमने लगा। वात्सल्य पीठ पर अविराम। एक-एक साधु-साध्वी की चित्त समाधि स्वास्थ्य एवं सेवा का किस तरह करते हो तुम उत्तजाम। यह कह दूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हर श्रावक-श्राविका हर भक्त हृदय के लिए तुम मीरा के घनश्याम और शबरी के राम। अद्भुत है तुम्हारा प्रबंधन कौशल। अनुपम है तुम्हारा प्रबंधन प्रवहण। अनुत्तर है तुम्हारी संयम साधना। इतने बड़े संघ की सार-संभाल और हजारों की भीड़ के बीच तुम निरंतर अपने भीतर की गहराइयों में डूबे रहते हो इसीलिए तुम संघ को आसमानी ऊँचाइयाँ देते रहते हो। कम बोलना अधिक सुनना यही है तुम्हारे ऊर्जस्वल व्यक्तित्व की पहचान। दूरदर्शी सोच, कड़ी मेहनत, मजबूत इरादे यही है तुम्हारे कालजयी कर्तृत्व की शान। तुम्हारे युगांतकारी नेतृत्व पर पूरा अध्यात्म जगत को अभिमान। लाखों लोगों को बाँध लेती है तुम्हारी एक मधुर मुस्कान। इस एक मोहक मुख मुद्रा की झलक पाने को बेताब रहती है हजारों निगाहें। क्या करिश्मा है तुम्हारी निगाहों में। जिस पर पड़ जाए वो निहाल हो जाए। वरदहस्त का जीकारा पाने वाला खुशहाल हो जाए। आशीर्वाद बरसे तो मानो मालोमाल हो जाए। भटकते कदमों को मिल जाती है मंजिल। आसान हो जाती है हर मुश्किल। डूबते को मिल जाता है साहिल। इसीलिए तुझ जैसे गरीब-निवाज पर फिदा है हर दिल। गजब है तेरे नाम की महिमा। अजब है तेरे मंगलपाठ का चमत्कार। हजारों कोषों दूर बैठे लोग भी श्रवण मात्र से हो जाते हैं ठीक।

जमाने की भीड़ में दुर्लभ है तेरे जैसे इंसान। इंसानी चोले में तुम साक्षात् भगवान। सबको देते हो समाधान इसीलिए युग-युग जीओ हे युगप्रधान। देते रहो अपने युगीन चिंतन से सुखी जीवन का प्रावधान और करते रहो विश्वमानव को अपनी असत प्रवृत्तियों से सावधान। दिव्यताओं के हे दिव्य पुंज। सरदारशहर के ओ गण सरदार! अपनी जन्मभूमि, दीक्षाभूमि, पट्टारोहण भूमि पर युगप्रधान अलंकरण अभिषेकोत्सव की इस पावन पुनीत बेला में सादर समर्पित सकल संघ का सहस्रशः मंगल वर्धापन।

नेमानंदन! शत-शत वंदन, भाव भरा लो श्रद्धाचंदन।।

संयम प्रदाता युगप्रधान - आचार्यश्री महाश्रमण

● साध्वी प्रांशुप्रभा ●

महातपस्वी महाश्रमण की किन शब्दों में महिमा गाऊँ।
युगप्रधान के शुभ अवसर पर, अंतर मन से देव बधाऊँ।।

झुमर नेमाँ नंदन प्यारे, दुगड़ कुल के तुम उजियारे।
लाखों की आँखों के तारे, भैक्षव शासन के रखवारे।
पुण्य पुरुष की पुण्य शासना पाकर अपना भाग्य सराहऊँ।।

तपःपूत भारत सपूत तुम, धन्य अहिंसा अग्रदूत तुम।
सत्य सुधा से अनुस्पूत्त तुम, गंगा सम पावन प्रसूत तुम।
शिक्षामृत का सिंचन पाकर, जीवन बगिया को विकसाऊँ।।

उज्ज्वल निर्मल आभामंडल, आकर्षक मोहक मुखमंडल।
घूम रहे ले धर्म कमंडल, श्रद्धानत सुर नर आखंडल।
गण गणपति के संकेतों पर अविरल आगे बढ़ती जाऊँ।।

सपनों को साकार करूँ मैं, पल-पल तेरा ध्यान धरूँ मैं।
लक्षित मंजिल शीघ्र वरूँ मैं, भव सागर को शीघ्र तरूँ मैं।
दो आशीर्वर ऐसा प्रभुवर, निश्चित आराधक पद पाऊँ।।

मुनि दीक्षा का शतक बनाया, जन्म सदी का पर्व मनाया।
अनुकंपा का घोष सुनाया, निष्ठमृत का पान कराया।
अमिट अहिंसा यात्रा तेरी, आस्था के नव दीप जलाऊँ।।

वर्ष करोड़ों राज करो तुम, पग-पग जय-जय विजय वरो तुम।
पीड़ित जन की पीर हरो तुम, मुझ में ऐसा जोश भरो तुम।
चरण शरण पा तेरी गुरुवर, संयम जीवन सफल बनाऊँ।
संयमदाता भाग्य विधाता, श्रीचरणों में शीष झुकाऊँ।।

आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस

कुंबलगुडू।

तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र परिसर में मुनि अर्हत कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १३वाँ महाप्रयाण दिवस का आयोजन हुआ। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि खुले गगन के तले जन्म लेकर विकास की खुली राह दिखाने वाले सूर्य का नाम है - आचार्य महाप्रज्ञ। महाप्रज्ञ अर्थात् प्रज्ञा का जीवन दर्शन वह दर्शन जो हमें जीने की कला सिखाता है।

बाल संत जय देव मुनि ने महाप्रज्ञ की महाप्रज्ञा को उजागर करते हुए गीत का संगान किया। इस शहर में महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ चेतना सेवा केंद्र में गांधीनगर, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश दक, बजरंग जैन, राजेंद्र मोदी सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे। इस अवसर पर राजेश चावत ने मुनिश्री के श्रीचरणों में कैलेंडर भेंट करते हुए आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर सेवा केंद्र के पदाधिकारियों ने अभिलाषा डांगी, रेखा पितलिया का सम्मान किया। अमित नाहटा चेतना सेवा केंद्र अध्यक्ष ने आभार प्रकट किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 - 22 मई, 2022

✦ *आप किसी को मानते हो या नहीं मानते हो पर आप जो कुछ करते हो, उसमें नैतिकता व प्रामाणिकता को रखने का प्रयास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव

टी-दासरहल्ली।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया गया। महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर जैन मंदिर के पास पंडाल में आयोजित हुआ। सामुहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अध्यक्ष कुशल बाबेल ने सभी का स्वागत किया।

राष्ट्रोत्थान ब्लड बैंक के सहयोग से शिविर का आयोजन हुआ। मोहनबाई रत्ना भगवतीलाल मांडोत परिवार (चिताम्बा), बैगलोर का सहयोग रहा। टी-दासरहल्ली के विधायक आर० मंजुनाथ, जय कर्नाटका के अध्यक्ष बी०एन० जगदीश, तेरापंथी ट्रस्ट निवर्तमान अध्यक्ष एवं तेयुप परामर्शक लादुलाल बाबेल, परामर्शक भगवतीलाल मांडोत, एसजेएमएम अध्यक्ष रोशनलाल कालिया, मंत्री हंसमुख बाबेल ने कैंप का अवलोकन किया।

महिलाओं एवं युवकों के सहयोग से कुल ६१ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर की सफलता में तेयुप से संयोजक कन्हैयालाल गांधी, सह-संयोजक महावीर दक, अभातेयुप से सामायिक सह-संयोजक राकेश दक, निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश चावत का विशेष श्रम रहा। मंत्री दिलीप पोखरना व तेयुप के सदस्यों की उपस्थिति रही। तेरापंथ ट्रस्ट, महिला मंडल और किशोर मंडल के साथ जैन महावीर मंडल सदस्यों का सहयोग रहा।

नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर

जयपुर।

तेयुप एवं मंगलमप्लस मेडिसिटी हॉस्पिटल के संयुक्त तत्त्वावधान में नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर मालवीय नगर स्थित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में आयोजित हुआ।

सेंटर के संयोजक श्रेयांस बैंगाणी ने बताया कि शिविर में न्यास के न्यासी व स्वर्ण पदक विजेता जनरल फिजिशियन डॉ० सिद्धार्थ जैन एवं डॉ० गुंजन शर्मा, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ० तरुण गोकलानी, शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ (पेट एवं लीवर), डॉ० अनुभूति भारद्वाज की सेवाएँ आमजन को नि:शुल्क प्राप्त हुई।

न्यास के चेयरमैन राजेश छाजेड़ ने बताया कि समाज के हरेक तबके को उच्च क्वालिटी की जाँच Advanced World Class diagnostic equipment के माध्यम से Pathology जाँच व ईसीजी, एक्स-रे, पीएफटी से संबंधित जाँच सुविधा रियायती दर पर प्रदान की जा रही हैं। शिविर में पधारे हुए डॉ० की टीम ने सेंटर के द्वारा संचालित गतिविधियों की सराहना की।

शिविर के शुभारंभ पर न्यास के न्यासी सुबोध पुगलिया, तेयुप जयपुर के मंत्री सुरेंद्र नाहटा, सहमंत्री ललित बैंगानी, कोषाध्यक्ष करण नाहटा, संगठन मंत्री प्रवीण जैन कार्यसमिति सदस्य प्रवीण भूतोड़िया, सौरभ जैन उपस्थित थे।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत Astitva Apartment Owners Association के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ६० रजिस्ट्रेशन हुए और कुल ५७ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

रक्तदान शिविर में पूर्वांचल सभा के मंत्री प्रवीण कुमार पगारिया, पूर्वांचल महिला मंडल की अध्यक्षा श्वेता डाकलिया, मंत्री बिंदु बोथरा, टीम एमबीडीडी के प्रभारी एवं उपाध्यक्ष अमित बैद, संयोजक रवि दुगड़, प्रभात चिंडालिया, कैंप संयोजक और मार्गदर्शक प्रमोद छाजेड़, अभातेयुप से नरेंद्र छाजेड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

Astitiva Apartment Owners Association के अध्यक्ष इंद्रचंद डागा, मंत्री आनंद बिनानी, परिषद के कार्यसमिति सदस्य श्रेयांस भंसाली, सिद्धार्थ भंसाली अनेक जनों ने शिविर में सक्रिय भूमिका निभाई। एमबीडीडी के २०२१-२२ सत्र के प्रायोजक पवन जैन दुगड़ को साधुवाद।

नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन

बेंगलोर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा श्रमण भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक दिवस के उपलक्ष्य में नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया।

नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप चामराजपेट स्थित मराठा हॉस्टल के प्रांगण में जैन युवा संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सहयोग के रूप में आयोजित किया गया। कैंप के अंतर्गत नि:शुल्क ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर व किडनी फंक्शन टेस्ट किए गए। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने कैंप की व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की। मुनि अर्हत कुमार जी, मुनि भरत कुमार जी व मुनि जयदीप जी ने कैंप का अवलोकन किया।

कुल ३८२ लाभार्थियों ने कैंप का लाभ लिया। तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, उपाध्यक्ष रंजीत राखेचा, भेरूलाल पोकरना, मंत्री प्रवीण बोहरा, सहमंत्री विवेक मरोठी, प्रदीप चोपड़ा, कोषाध्यक्ष सुरेश संचेती, एडीसी प्रभारी रजत बैद, अंगुडी संयोजक संदीप चोपड़ा, राजाजीनगर संयोजक रोहित कोठारी, सुधीर पोकरना सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

ओल्ड ऐज होम में सेवा कार्य

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा ओल्ड ऐज होम में निवासित वृद्धजनों तथा उनकी देखरेख करने वालों को राशन की सामग्री का वितरण किया। इस सेवा कार्य के प्रायोजक स्व० सुमन देवी सुराणा की प्रथम पुण्यतिथि पर दिलीप सुराणा परिवार थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। परिषद अध्यक्ष सुशील भंसाली ने उपस्थित प्रायोजक परिवार सहित इस मौके पर मौजूद सभी सदस्यों का स्वागत किया। प्रायोजक परिवार से दिलीप सुराणा ने सेवा कार्य की सराहना की।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेयुप सदस्य सुमित सुराणा, किशोर मंडल संयोजक विनीत भंसाली, तुषार बांठिया ने सहयोग किया। सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग दीक्षांत समारोह का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग दीक्षांत समारोह तेरापंथ भवन, राजराजेश्वरी नगर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप उपाध्यक्ष रमेश डागा द्वारा कार्यक्रम की विधिवत शुभारंभ की घोषणा हुई। विजय गीत का संगान तुलसी संगीत सुधा के सदस्यों द्वारा किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष मनोज डागा द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। परिषद अध्यक्ष सुशील भंसाली ने सभी का स्वागत किया। सात दिवसीय कार्यशाला के प्रथम दो दिवस संगीता गन्ना ने सभी को मंच पर खड़े होना, फेस पे स्माइल, चेक लिस्ट आदि के बारे में विस्तार से बताया। महावीर भटेवरा ने सभी प्रतिभागियों को स्वागत भाषण, आभार ज्ञापन आदि की जानकारियाँ दी। अंतिम तीन दिन नेशनल ट्रेनर अमित सुराणा ने पिछले चार दिनों का रिवीजन कर पाँचवें दिन समुह बनाकर नाटक प्रस्तुति एवं वक्तव्य कला के गुर बताते हुए कुशल वक्ता के लिए तैयार किया।

सप्त दिवसीय कार्यशाला में एक कुशल वक्ता कैसे बनें गुण धारण कर सभी ग्रुप के प्रतिभागियों के द्वारा शानदार प्रस्तुतियाँ दी गई। राजराजेश्वरी नगर सभा अध्यक्ष मनोज डागा ने परिषद को बधाई दी। अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक एवं मुख्य अतिथि दिनेश पोखरणा ने सभी सी०पी०एस० प्रतिभागियों को इस सफर को बरकरार रखने की प्रेरणा दी।

अभातेयुप के महामंत्री पवन मांडोत, राष्ट्रीय प्रशिक्षक अमित सुराणा, प्रशिक्षक संगीता गन्ना, सी०पी०एस० के स्थानीय संयोजक दिनेश मरोठी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यशाला के प्रशिक्षकों एवं प्रायोजक परिवार अनिल सुनील सुराणा (राजगढ़) बंगलौर का जैन पट्ट एवं ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। अध्यक्ष सुशील भंसाली के नेतृत्व में सीपीएस संयोजक दिनेश मरोठी, सह-संयोजक पंकज बैद का विशेष श्रम रहा। विशिष्ट अतिथि गणपतलाल कोठारी, अभातेयुप परिवार से राकेश दक, गांधीनगर परिषद अध्यक्ष विनय बैद, नेशनल, जोनल प्रशिक्षक परिषद के संस्थापक अध्यक्ष राजेश भंसाली, निवर्तमान अध्यक्ष नरेश बांठिया, पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही।

टॉप ५ को विशेष सम्मान किया गया। सभी संभागियों को सीपीएस कार्यशाला सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। जिसे पाकर सभी पार्टिसिपेंट्स को गर्व की अनुभूति हुई। मंत्री विकास छाजेड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

यह म्यूजियम नई पीढ़ी के लिए ज्ञान का...

(पृष्ठ १२ का शेष)

हमारा धर्मसंघ भी खूब चित्त समाधि में रहे। हम सब धर्मसंघ की सेवा करते हैं। खुद की साधना के साथ दूसरों की सेवा में सहयोगी बनते रहें। सरदारशहर प्रवास में भी इतने लोग बाहर से निवासी लोग आए हैं। लोगों ने मौके का लाभ उठाने का प्रयास किया है। निमित्त से मिलना हो जाता है।

म्यूजियम (महाप्रज्ञ दर्शन) लोकार्पण के अवसर पर महासभाध्यक्ष मनसुख सेठिया, मुख्य ट्रस्टी सुरेश गोयल, म्यूजियम कल्पनाकार मनीष बरड़िया, महासभा महामंत्री विनोद बैद, स्थानीय सभाध्यक्ष सिद्धार्थ चिंडालिया, सीमा मिश्रा, संपत बच्छावत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित तेरापंथ का यशस्वी साध्वी समाज भाग-४-५ व साध्वी राजुलप्रभाजी द्वारा संकलित पुस्तक East VS West Oneirocritica लोकार्पण की गई।

आचार्य महाप्रज्ञ जी का १३वाँ महाप्रयाण दिवस

सिंधिकेला।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ जी का १३वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुनिश्री ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी सिद्ध योगी पुरुष थे। गहन साधना से अनेक सिद्धियाँ उन्हें प्राप्त हुई थी। उनकी भीतर की प्रज्ञा जागृत थी। अपने जीवन में ध्यान के अनेक प्रयोग स्वयं पर किए। उनका दृष्टिकोण आध्यात्मिक के साथ वैज्ञानिक भी था।

कार्यक्रम का शुभारंभ सिंधिकेला महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। सभाध्यक्ष माणिक जैन, प्रांतीय सभाध्यक्ष मुकेश जैन, सभा मंत्री प्रसन्न जैन महासभा प्रभारी छत्रपाल जैन, कांटाबांजी महिला मंडल अध्यक्षा बॉबी जैन, बोर्डा से अरिहंत जैन एवं बंगुमुंडा से तुलसी जैन ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रति वक्तव्य एवं गीत के द्वारा भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संयोजन धीरज जैन ने किया।

✦ *आत्मा की शुद्धि होने पर जो आनंद मिलता है, वह भी सुख है तथा बाह्य वस्तुओं से भी सुख की प्राप्ति हो सकती है। एक आध्यात्मिक सुख है तो दूसरा भौतिक सुख है।*

✦ *व्यक्ति आकृति से नहीं, प्रकृति से अधम अथवा महान् बनता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

गुरु से गलती न छिपाएँ तो शुद्धि हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, ४ मई, २०२२

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि प्रश्न होता है कि निर्वाण को कौन प्राप्त कर सकता है? धार्मिक साहित्य में निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति की बात आती है। आध्यात्मिक साधना की अंतिम और संपूर्ण निष्पत्ति तब होती है, जीव को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

आज तक हम सबकी आत्माओं ने अनंत-अनंत जन्म ग्रहण कर लिए हैं। जन्म कोई आदि नहीं है। अनादि काल से हमारी आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र से परिभ्रमण कर रही है। अभव्य जीव तो कभी मुक्त होंगे ही नहीं। यह अभव्य पारिणामिक भाव है। अभव्य है तो है, भव्य है तो है। साधना के द्वारा हम मुक्ति पाने का प्रयास करते हैं। यह एक प्रसंग से समझाया कि भव्य जीव को कभी तो मुक्ति मिल सकती है। जिसके जीवन में धर्म है, उसको निर्वाण प्राप्त हो सकता है। जो शुद्ध हृदय वाला व्यक्ति होता है, उसके जीवन-आत्मा में धर्म ठहरता है। जो ऋजु है, सरल है, उसकी शुद्धि होती है।

जीवन में गलतियाँ, प्रमाद हो सकता है। दोष का परिमार्जन होता रहे। सरलता के बिना दोषों की शुद्धि मुश्किल है। गुरु से गलती न छिपाएँ तो शुद्धि हो सकती है। गुरु के सामने होशियारी नहीं झाड़नी चाहिए।

सरलता और सच्चाई का गहरा संबंध है। सच्चाई सरलता के आसन पर विराजमान हो सकती है। गृहस्थ व्यवहार-लेन-देन में ईमानदारी रखे तो शुद्धि रह सकती है। इससे चेतना की शुद्धि रह सकती है।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि इस दुनिया में कोई भी आत्मा न हीन है, न अतिरिक्त है। अहंकार हमें नहीं करना चाहिए। क्रोध-मान अपने चिंतन से ही पैदा होता है। अहंकार कई प्रकार से पैदा हो सकता है। अहंकार से व्यक्ति व्यथित हो जाता है। अहंकार को खत्म करने के लिए अनित्यता की अनुप्रेक्षा करें। कंठ का भी कायोत्सर्ग करे। इससे एकाग्रता बढ़ती है। मृदुता की अनुप्रेक्षा करें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सपना लुणिया ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अनासक्त-निर्लिप्त भाव से संसार में रहने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, ६ मई, २०२२

६ मई, २०१० के दिन पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने सरदारशहर में महाप्रयाण किया था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना देते हुए फरमाया कि हमारे यहाँ तेरापंथ धर्मसंघ में बत्तीस आगमों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल, चार छेद ओर एक आवश्यक।

इन बत्तीस आगमों में एक है—उत्तराध्ययन। इस आगम में छत्तीस अध्याय हैं। इस आगम में तात्त्विक बात मिलती है और कथानक व घटना प्रसंग भी मिलते हैं। साधु के बत्तीस परिषदों का जितना इसका भी विस्तार से प्रशिक्षण इस आगम के दूसरे अध्ययन में प्राप्त किया जा सकता है। पहले अध्ययन में विनय कैसे करना प्रशिक्षण दिया गया है। बत्तीसवें अध्याय में आध्यात्मिक संयम की दृष्टि से निर्देश प्राप्त होते हैं। उन्तीसवाँ अध्ययन तो प्रश्नोत्तर के रूप में बड़ा सुंदर है। इस आगम का दसवाँ अध्ययन छोटा सा है, इस अध्ययन के श्लोकों के अंत में बार-बार एक ही आता है—गौतम समय मात्र भी प्रमाद न करो। अप्रमाद की प्रेरणा से भरा हुआ है। अप्रमाद के अनेक आधार बताए गए हैं।

जैसे बताया गया है कि प्रमाद क्यों नहीं करना चाहिए कि जीवन अनित्य है। जैसे कुश के अग्रभाग पर औस की बूँद लटक रही है, वो ज्यादा देर टिकने वाली नहीं है। हर पदार्थ नित्यानित्य होता है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी सन् २०१० में सरदारशहर पधारे थे। यहीं उनका गोठीजी की हवेली में महाप्रयाण हो गया था। जीवन अनित्य है, हम अनित्यता से प्रेरणा लें कि जितना अच्छा काम कर सकें, धार्मिकता की साधना कर सकें, वो खास बात है।

धर्म के काम में आलस्य नहीं करना चाहिए, जितना जल्दी हो धर्म का कार्य शुरू कर देना चाहिए। गृहस्थ में रहते हुए भी धर्म का संचय करें। शरीर, धन-संपत्ति नित्य नहीं है, रोज मृत्यु निकट आ रही है, धर्म का संचय करते रहो। वो संपत्ति तुम्हारी है, आगे जाने वाली है।

हमारा मोह माया, संसार की ओर कम हो। राग व पदार्थों के प्रति मोह भाव कम हो। ज्यादा आत्मा के आसपास आत्मा में रह सकें। कमल पत्र की तरह अनासक्त-निर्लिप्त भाव से संसार में रहने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में संसारपक्षीय परिवार से तनीश दुगड़, नीता बोथरा, कोमल दुगड़, ललित दुगड़, नेमीचंद, विनोद बैद, अखिल भारतीय महिला मंडल, भारती डागा, शशि पींचा, सरला बरड़िया, भंवरलाल नखत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने महिला मंडल को आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

यादें... शासनमाता की - (७)....

(पृष्ठ १२ का शेष)

हमें इस जन्म में साधना का मार्ग मिल गया है। साधु के तो सामान्यतया देवगति मानकर चलें। कर्म तो खुद को भोगने पड़ते हैं। किंतु उसमें भी समता भाव जितना रख सकें, अच्छा है। हालाँकि मौके पर समता कितनी रख सकें, पर आदर्श तो यही है।

इसके बाद आचार्यप्रवर ने पुण्य-पाप पूरब कृत---गीत के कई पद्यों का संगान किया।

आचार्यप्रवर : इतनी देर तक सोना भी सरल नहीं है। मन कैसे लगे? किसी से बात नहीं, न लिखना-पढ़ना। सोते-सोते टाइम कैसे पास हो? णमो सिद्धाणं---जप करते-करते उनसे ताँता जुड़ जाए। पूर्वकृत कर्मों को भोगने से या निर्जरा होने से ही छुटकारा मिलता है।

साध्वीप्रमुखाश्री : कृपा करवाई, गुरुदेव कितनी मेहनत करवा रहे हैं?

आचार्यप्रवर : पैरों में मालिश करने से साता मिलती है क्या? कभी धीमें-धीमें मालिश करते रहें। कहीं असाता नहीं हो, इन्हें साता मिले। आचार्य महाप्रज्ञजी मालिश (व्यावच) करवाते। मैं एक दिन गुरुदेव तुलसी के पास पाँव दबाने के लिए गया। गुरुदेव ने तुरंत पाँव खींच लिए। गुरुदेव ने फरमाया कि मेरे पैर नहीं दुःखते, मेरे साँस की तकलीफ है, उसको तुम दूर कर सको तो कर दो।

मुनि दिनेश कुमारजी : आचार्य महाप्रज्ञजी के जब युवाचार्य महाश्रमणजी मालिश करते, तब वे फरमाते कि महाश्रमण का तेजस शरीर कितना सदाम है, तुम लोग कोई (मुनिवृंद) नहीं कर सकते, किंतु ये थोड़ी देर में विद्युत जैसे बना देते हैं।

आचार्यप्रवर : आपको जैसे साता मिले, वैसे पैर दबवाते रहें। श्वास में कठिनाई तो नहीं हुई?

साध्वीप्रमुखाश्री : थोड़ी है।

आचार्यप्रवर : थोड़ी है? कुछ देर बाद हम वापस आएँ।

साध्वीप्रमुखाश्री : वापस पधारकर क्या करवाएँगे?

आचार्यप्रवर—(पास वाले कक्ष की ओर इशारा करते हुए) हम यहीं पर हैं।

आचार्यप्रवर ने पुनः शाम को ५:३० पर पधारकर आराधना के कुछ पद्यों, गीतों का संगान किया और फिर अपने प्रवास-स्थल पर पधार गए।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 - 22 मई, 2022

✦ *किसी भी जाति, वर्ग, संप्रदाय का व्यक्ति हो, यहाँ तक कि नास्तिक भी क्यों न हो, अणुव्रत का द्वार सबके लिए खुला है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी से लैस 'महाप्रज्ञ दर्शन' (म्यूजियम) का भव्य लोकार्पण

यह म्यूजियम नई पीढ़ी के लिए ज्ञान का माध्यम बन सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारशहर, ८ मई, २०२२

सरदारशहर में स्थित हमारे दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का समाधि स्थल–अध्यात्म का शांतिपीठ। महासभा द्वारा वहाँ पर महाप्रज्ञ दर्शन म्यूजियम बनाया गया है। इस म्यूजियम का लोकार्पण परम पावन के चरण स्पर्श व मंगलपाठ से हुआ।

आचार्य महाप्रज्ञजी के पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग ६:४० पर तेरापंथ भवन से विहार कर आचार्य महाप्रज्ञ समाधि स्थल पधारे। लगभग पूज्यप्रवर ने डेढ़ घंटे तक म्यूजियम का अवलोकन किया। श्रावक-श्राविका समाज की भी अच्छी उपस्थिति थी।

परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि समाधि के बारे में आगम वाङ्मय में संदेश-निर्देश दिया गया है कि समाधि चार प्रकार की होती है। विनय समाधि, श्रुत समाधि, तप समाधि और आचार समाधि। शांति, परम शांति, कर्म मुक्ति रूप में परम शांति पाने के लिए आदमी को विनय का अभ्यास करना चाहिए।

विनय से शांति-समाधान मिल सकता है। श्रुत-ज्ञान की आराधना से भी चित्त को समाधान-शांति मिल सकती है। जिज्ञासा का उत्तर मिलना समाधान होता है। तपस्या भी एक समाधि प्रदाता तत्त्व है। तप से शरीर व चित्त में समाधि मिलती है व कर्म निर्जरा होती है। आदमी का आचार, चारित्र, आचरण ठीक होता है, तो बड़ी समाधि मिलती है।

परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी जैन शासन के एक संप्रदाय श्वेतांबर तेरापंथ के दशम आचार्य थे। हमारे धर्मसंघ में वे सबसे बड़ी उम्र में आचार्य बनने वाले, सबसे अधिक संयम पर्याय प्राप्त करने वाले भी अतीत के दस आचार्यों में आचार्य महाप्रज्ञजी थे। सबसे अधिक आयुष्य प्राप्त करने वाले भी आचार्य महाप्रज्ञ थे।

आचार्य महाप्रज्ञजी के पास ज्ञान का अच्छा विकास था। वे अनेक भाषाओं, तत्त्व के, आगमों के, विषयों के अध्येता रहे हैं। उनके व्यवहार में कितना विनय भाव था। जीवन के आठवें दशक में भी वो गुरुदेव तुलसी को बैठकर वंदना किया करते थे। वे छोटे साधु की तरह गुरु को वंदना किया करते थे।

गुरुदेव तुलसी की भी महानता थी कि अपने युवाचार्य को स्वयं का पद विसर्जन करके आचार्य बना दिया था। ये हमारे तेरापंथ धर्मसंघ की अद्वितीय घटना है। आचार्य महाप्रज्ञ जी में भी विनय समाधि थी।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने बड़ी तपस्याएँ तो नहीं की थी, परंतु उनका खाद्य संयम था और खाद्य में विवेक भी था। अंतिम दिन तक उन्होंने प्रवचन किया था। उनका दिमाग कितना सक्रिय था, भाषा कितनी अच्छी थी। प्रवचन करना भी एक तपस्या ही है। बोलने में भी सारपूर्ण बोलना भी एक तपस्या है।

साधु का आचार तो पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ, तीन गुप्तियाँ होती हैं। वे तो ग्यारहवें वर्ष में भी साधु बन गए थे। आचार चारित्र भी अपने आपमें एक समाधि है।

आज यहाँ वापस जल्दी ही सलक्ष्य आना हुआ है। महासभा ने मानो बुला लिया है। वैसे मैं अच्छे टाइम पर आया हूँ। षष्टीपूर्ति के मौके से पहले गुरु के समाधि स्थान पर आना हो गया। पट्टोत्सव के समय भी ऐसे ही आना हो गया था।

महाप्रज्ञ दर्शन म्यूजियम का अवलोकन किया। इसका अच्छा उपयोग हो, कुछ आकर्षण भी है। नई पीढ़ी के लिए रुचिकर हो सकता है। ज्ञान का माध्यम बन सकता है। कितनों का श्रम लगा है। अपने धर्मसंघ के स्तर पर पहली बार ये देखा है। कुछ आधुनिकता के साथ बना है। समाधि स्थल का परिसर भी अच्छा है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

यादें... शासनमाता की - (७)

● साध्वी स्वस्तिक प्रभा ●

१२ मार्च, २०२२, आज प्रातः लगभग ७:०० बजे पधारकर आचार्यप्रवर ने ७:३५ तक साध्वीप्रमुखा को सेवा-उपासना करवाई।

आचार्यप्रवर : रात को कैसे रहा? नींद और---

साध्वी कल्पलताजी : सदा की तरह ही रहा।

परमपूज्य ने वीरत्थुई के पाठ के बाद 'श्रद्धा विनय समेत' गीत का संगान किया। जाते समय साध्वीप्रमुखाजी को नमस्कार महामंत्र सुनाकर कक्ष में पधारे। लगभग १०:०५ पर पुनः साध्वीप्रमुखाश्री जी के कक्ष में पधारे।

आचार्यप्रवर : महेंद्र कुमारजी स्वामी ने पत्र भेजा है, पढ़ दें। (साध्वीवर्याजी से) तुम पढ़ दो, धीरे-धीरे पास में जाकर।

साध्वीप्रमुखाश्री : आचार्यप्रवर प्रवचन में पधारें।

आचार्यप्रवर ने मौन मुस्कुराहट में प्रत्युत्तर दिया।

साध्वीप्रमुखा : कृपा करवाई, अनुग्रह करवाया।

पुनः ३:३० पर आचार्यप्रवर का साध्वीप्रमुखाश्री के पास पधारना हुआ।

आचार्यप्रवर : कैसे हैं? (अचानक कुर्सी से उठकर साध्वीप्रमुखा के पास जाकर फरमाया)। बोला हुआ अरुचिकर तो नहीं लगता?

साध्वीप्रमुखाश्री : नहीं (गर्दन हिलाते हुए)

आचार्यप्रवर : (साध्वीप्रमुखाश्री के पास विराजकर) आपको रुचि हो तो गीतिका या आगम कुछ सुना दें? किसकी रुचि है?

साध्वीप्रमुखाश्री : (इशारे से) कुछ भी।

आचार्यप्रवर : आहार क्या लिया? दलिया लेते हैं क्या?

साध्वी सुमतिप्रभाजी : दलिया की मात्रा ज्यादा नहीं ले सकते। कोशिश की मगर उबाक आ जाती है। अस्पताल में १-२ दिन लिया था। एक दिन रात में साध्वीप्रमुखाजी को सपना आया कि रुपचंदजी दुगड़ (बीदासर) ने खीर की भावना भाई।

साध्वीप्रमुखाश्री : ये सपना बताने के बाद से मुझे खीर दी खीर खिलाई।

साध्वी सुमतिप्रभाजी : उस दिन (सपने वाले दिन) बहुत विलंब हो गया। नवकारसी आए हुए काफी देर हो गई थी। मैंने साध्वीप्रमुखा से निवेदन किया तो फरमाया कि मासखमण का पारणा इतनी जल्दी थोड़ी होता है, समय तो लगता ही है। (गत १ महीने से साध्वीप्रमुखा के आहार की मात्रा काफी कम थी और साध्वीप्रमुखा ने एक बार फरमाया था कि मेरे अत्याधिक ऊनोदरी का मासखमण सा हो गया है)।

आचार्यप्रवर : अपना ये सिद्धांत है कि आत्मा अनंत काल से यात्रा कर रही है। इस आत्मा में सम्यक्त्व आ जाए, चारित्र भी आ जाए तो वह बहुत बड़ी बात हो जाती है। भगवान महावीर की आत्मा ने भी कितने-कितने जन्म लिए। आत्मा जब साधना में लग जाए तो ऐसा मानें कि भवसागर का किनारा आ गया। भगवान महावीर की आत्मा ने भी कितनी साधना की–वासुदेव, चक्रवर्ती और बाद में तीर्थंकर बन गए।

आखिर नंदन राजर्षि के भव में ११ लाख, कितनी मासखमण की तपस्या की। भगवान महावीर के जन्म में भी १२ साल तक तपस्या की, उसमें भी कितने उपद्रव हुए। केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद बस किनारा आ गया।

(साध्वीप्रमुखाजी से) आपकी आत्मा नरक में गई या नहीं, पता नहीं। मरुदेवा माता की आत्मा नरक में नहीं गई, वर्णन के अनुसार वनस्पति के सिवाय तिर्यंच में नहीं गई। केले के पत्ते में जाने की बात आती है। यह जरूरी नहीं है कि सबकी आत्मा नरक में जाए ही। मरुदेवा का जीव निगोद में रहा, न देव में गया, न नरक में।

भगवान महावीर की आत्मा बहुत बार नरक में पधारी है। देवगति में भी गई है। साधना करते-करते मंजिल तक पहुँचने के लिए अनेक जन्म लग जाते हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**